खण्ड VI अंक 5 व 6

चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति

"भौतिकतावादी विचारों से हमें छुटकारा पाना होगा। मैं नहीं कहती कि आप हिमालय में चले जाएं, सन्यास ले लें, या बुद्ध की तरह से अपने बच्चों को त्याग दें। परन्तु आप में निर्लिप्सा तो होनी ही चाहिए।"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजय नाल गिरकर
162, मुनिरका विहार,
नई दिल्ली-110067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली-110060.
फोन : 5710529, 5784866

चैतन्य लहरी

खण्ड VI अंक 5 व 6

विषय सूची

	पृष्ठ
(1) पूजा के विषय में श्री माता जी का परामर्श	3
(2) श्री महालक्ष्मी पूजा	13
(3) श्री महाकाली पूजा, पैरिस 11-7-1993	18
(4) श्री कृष्ण पूजा, हथिनी कुण्ड, हरियाणा 11-12-1993	21

पूजा के विषय में श्रीमाताजी का परामर्श

पूजा या प्रार्थना आप के हृदय में विकसित होती है। मंत्र आपकी कुण्डलिनी के शब्द हैं। परन्तु यदि मंत्रों का उच्चारण हृदय से न किया जाए या मंत्रोच्चारण में कुण्डलिनी का सम्बन्ध न हो तो पूजा मात्र कर्मकाण्ड बन जाती है। हृदय में पूजा करना सर्वोत्तम है। पूजा में आपको पूर्ण श्रद्धा पूर्वक मंत्र कहने चाहिए। श्रद्धा जब गहन हो जाए तभी पूजा करनी चाहिए क्योंकि तब हृदय स्वयं पूजा करता है। उस समय कृपा की लहरियाँ बहने लगती हैं क्योंकि उस समय आत्मा से आवाज निकल रही होती है। लोग सुरा से अपने गिलास भर लेते हैं। आपकी पूजा भी ऐसी ही है। इसमें श्रद्धा आपकी शराब है और मंत्रोच्चारण और पूजा आपका गिलास। सब कुछ भुलाकर जब आप उस सुरा को पीते हैं तभी आप आनन्द के सागर में गोते लगा सकते हैं। परन्तु जो आनन्द आप इस सुरा को पीकर प्राप्त करते हैं वह शाश्वत और सदा मिलने वाला है।

दूसरी बात जो आपको जाननी है वह यह है कि आपकी गुरू बहुत महान लोगों की माँ भी हैं। इस बात का विचार मात्र ही आपके गुरू तत्वल को स्थापित कर देगा मेरे कितने महान पुत्र हुए। वे कितने महान व्यक्तित्व थे। शब्द उनका वर्णन नहीं कर सकते, एक के बाद एक वे इतनी अधिक हुए। आप भी उसी परम्परा से हैं। मेरे शिष्य उन्हें अपना आदर्श बनाए रखें। उनका अनुसरण करें, उनके विषय में पढ़ें, उन्हें समझें कि उन्होंने क्या कहा और किस प्रकार यह शिखर उन्होंने प्राप्त किये। उन्हें मान्यता दें, उनका सम्मान करें। आप अपना गुरू तत्व स्थापित कर सकेंगे। उनकी बताई गई सारी बातों को आत्मसात करें। उन पर गर्वित हों। लोगों की कही बातों से पथभृष्ट न हों। सारी जनता को हम अपनी ओर खींचने वाले हैं। सर्वप्रथम हमें अपना वजन और गुरूत्व स्थापित करना है। जैसे पृथ्वी माँ सबको अपनी ओर खींचती रहती है। इसी प्रकार हम भी सबको अपनी ओर खीचेंगे। आज आपने अन्दर अपनी आत्मा से वायदा करना है कि आप अपनी माँ की आशाओं के अनुसार एक योग्य गुरू बनेंगे।

अब भवसागर को स्थापित होना है। सर्वप्रथम आप अपने गुरू को जानें कि वे हर चक्र पर विराजित हैं। अपने इतने महान गुरू की कल्पना कीजिए। इससे आपको आत्मविश्वास प्राप्त होगा। इतने आश्चर्यजनक गुरू के कारण ही सब लोग इतनी सुगमता से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर रहे हैं। किसी धनी व्यक्ति के पास यदि आप भिक्षा लेने के लिए जाएं तो वह आपको दो पैसे भी नहीं देगा। परन्तु आपकी गुरू क्योंकि अत्यन्त शक्तिशालिनी है इसलिए आप इतनी सुगमता से सारी शक्तियाँ प्राप्त कर रहे हैं। अतः आपको इस उपलब्धि पर अत्यन्त प्रसन्न होना चाहिए, अत्यन्त प्रसन्न और प्रफुल्लित कि आपके पास यह शक्तियाँ हैं। कम से कम वे लोग जो सहजयोग में हैं वे इस बात को विश्वस्त रूप से जान जाएंगे। जो लोग पहली बार मेरे भाषण में आए हैं वे थोड़े से उलझन में पड़ेंगे। आप सब लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि यह क्या है। अतः अपनी गुरू शक्ति को समझने के लिए आप सबसे पहले यह जान लें कि आपकी गुरू कौन हैं? "साक्षात आदि शक्ति।" हे परमात्मा। यह तो बहुत बड़ी बात है। तब अपने भवसागर को स्थापित कर लें।

एक गुरू, विशेषतया मेरे शिष्य, अपनी माताओं और बहनों के अतिरिक्त किसी अन्य के सामने सिर नहीं झुकाते। आपने देखा होगा कि आप भी ऐसा ही करते हैं।

आज गौरी का दिन है। गौरी ने कंवारी अवस्था में, श्री गणेश का सृजन किया। उसी प्रकार आपको भी आत्मसाक्षात्कार प्रकार हुआ। ठीक उसी प्रकार। अतः आपको भी गौरी की उसी शक्ति का उपयोग अपने अन्दर करना होगा। आपको अपना हृदय स्वच्छ रखना होगा। आपका हृदय और विचार स्वच्छ होने आवश्यक हैं। आपका मस्तिष्क पवित्र होना चाहिए। निसन्देह भक्ति यह पवित्रता प्रदान करती है, परन्तु यदि आप के मस्तिष्क में कुछ भी बचा हुआ है तो मैं आपको बताती हूँ कि आज से तीन बातें घटित हुआ करेंगी। पहली, हमने विश्व निर्मला धर्म चलाया है। आप श्री गणेश की दृष्टि में हैं, अपनी आत्मा के पथ प्रदर्शन में हैं, और सर्वशक्तिमान परमात्मा के आशीर्वाद में हैं। सावधान रहें क्योंकि एक बार जब आप इस स्थिति को पा लेते हैं तो आपको धर्म पर दृढ़ रहना होगा और धर्म के प्रति अत्यन्त ईमानदार होना होगा।

धर्म पर चलने का निर्णय यदि आपने कर लिया है तो आज से सावधान रहें, मर्यादाओं से यदि आप निकले तो आपको कुछ भी हो सकता है। जब तक आप सहजयोग की मर्यादाओं में, सीमाओं में रहेंगे तब तक आपको कोई हानि या आघात नहीं पहुंच सकता। इसके विपरीत यदि आप मर्यादाओं में रहेंगे तो जीवन का आनन्द उठाएंगे। परन्तु सहजयोग की मर्यादाओं को यदि आप छोड़ देंगे तो भयंकर समस्याओं में फंस जाएंगे।

अतः दूसरी बात जो मैं आपको बताना चाहती हूँ वह यह है कि बहुत समय पूर्व आत्मसाक्षात्कारी लोगों को जिसका वचन दिया गया था वह दिव्य-दर्शन हमने आज शुरू किया है।

अपनी आत्मा बनिए, सभी कुछ बहुत अच्छा होगा। किसी बात से विचलित न हों, किसी चीज़ के लिए चिन्तित न हों। पूर्ण तया शान्त रहने का प्रयास करें। यह देखने के लिए कि आप कितना अपनी आन्तरिक शान्ति की अवस्था में रहते हैं, मैं आपकी परीक्षा लेती रहती हूँ। आपने यदि कोई अपराध नहीं किया तो ठीक है। जब आपने कोई बुराई नहीं की तो चिन्ता की कोई बात नहीं। और यदि आपने कोई अपराध कर भी दिया है तो परमात्मा क्षमा के सागर हैं। अतः किसी प्रकार की चिन्ता न करें। पूर्ण दृढ़ता एवं साहस के साथ दिव्य-दर्शन के इस वचन को आगे बढ़ायें।

तीसरी बात है कि यह सब कुछ जो हम कर रहे हैं इसके साथ-साथ परमात्मा से वायदा करें कि पूरी सूझबूझ से हम सहजयोग को समझेंगे, इसके एक-एक शब्द पढ़ कर हम सहजयोग के ज्ञान में प्रवीणता प्राप्त करेंगे। हम स्वयं को स्वच्छ रखेंगे तथा अपना जीवन पूर्णतया सहजयोग को समर्पण करेंगे अपने हृदय में आपको इसके लिए वचनबद्ध होना है। सहजयोग को समर्पित होना, वास्तव में आनन्द, आशीष और शान्ति को समर्पित होना है। इसमें आपका लाभ है और किसी की भी हानि नहीं। अतः आज हमने सदा के लिए इस बात का निर्णय लेना है।

अब मैं देखती हूँ कि सहजयोग एक नया मोड़ लेने वाला है। निसंदेह यह होने वाला है। हम एक ऐसी अवस्था तक पहुँचने वाले हैं जहां हजारों लोग हमारे साथ सम्मिलित हो जाएंगे। परन्तु सर्वप्रथम, जो लोग आधार शिलाओं में हैं, जो पहले लोग हैं, उन्हें अपने मूर्खतापूर्ण लालच, सभी प्रकार के मूर्खतापूर्ण कार्य जो आज तक आप करते रहें और जो असहज हैं, उनसे ऊपर उठने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। आपकी भाषा मधुर होनी चाहिए तथा व्यवहार बहुत ही अच्छा नम्र और कोमल। आपको एक योगी की तरह चलना चाहिए, एक संत की तरह जीवन व्यतीत करना चाहिए ताकि आपके माध्यम से लोग सहजयोग की महानता को देख सकें।

जब मैं इटली में थी तो मैंने कहा कि इंग्लैंड पूरे ब्रह्माण्ड का हृदय है तो वे लोग इस बात को स्वीकार न कर पाए। इस कथन से उन्हें बहुत धक्का लगा। वे विश्वास न कर पाए कि इंग्लैंड भी ब्रह्माण्ड का हृदय हो सकता है। इसका एक कारण यह था कि एक बार रोमन लोगों ने अंग्रेज लोगों पर आक्रमण किया था और उस समय रोमन लोगों को ये लगा था कि अंग्रेज अत्यंत अहंकारी हैं। अपनी पराजय को भी वे सम्मान पूर्वक स्वीकार न करेंगे। पराजित होने पर भी वे अत्यन्त अहंकारी हुआ करते थे। यदि हृदय की यह अवस्था है तो ब्रह्माण्ड की क्या अवस्था होगी? तब उन्होंने अंग्रेजों के अहंकार को मेरे सामने विस्तारपूर्वक वर्णन किया। तब मुझे लगा कि मैं भी इसी प्रकार की कुछ बातों से परिचित हूँ।

अब हृदय की वह उच्चावस्था प्राप्त करना संभव है क्योंकि आप लोग इंग्लैंड की विशिष्ट भूमि पर उत्पन्न हुए हैं। वह सम्भावना अवश्य ही आपके अन्दर बनी हुई होनी चाहिए। तो फिर कमी क्या है? ऐसा क्यों है कि सारी सम्भावनाओं, महान पृष्ठ भूमि और सारी विशेषताओं के कारण यहाँ होकर भी हम पाते हैं कि सहजयोगी वर्षों तक भी अन्य सहजयोगियों की उच्चावस्था को नहीं पा सकते? क्या कारण है? हृदय को यदि आप देखें तो इसमें धड़कन की एक गति है और यह एक विशेष प्रकार की आवाज़ से चलता है। आप इसे लेखाचित्र (ग्राफ) पर ला सकते हैं, यह अत्यन्त सुव्यवस्थित नियमित और अनुशासित है कि कोई धीमी सी आवाज या हल्का सा परिवर्तन भी लेखाचित्र पर दिखाई पड़ता है। यह इतनी संवेदनशील वस्तु है। और यहां पर इसी की कमी है, हृदय के अनुशासन की।

आज जब हम महानतम, नवरात्रि, का उत्सव मना रहे हैं तो इसमें कुछ विशेषता तो होनी चाहिए। आज हमें यह हृदय पूर्णतया स्वच्छ करके इसे इतना पवित्र कर देना है कि यह इसके अन्दर से बहकर पूरे शरीर में जाने वाले सारे रक्त को पवित्र कर दे। जिन कोषाणुओं से हृदय बना है उनका सर्वोत्तम होना आवश्यक है क्योंकि मानव शरीर में हृदय के कोषाणु उच्च कोटी के तथा संवेदनशील होते हैं। हृदय ही 'अनहद' की अभिव्यक्ति करता है अर्थात बिना आघात के उत्पन्न हुई आवाज की अभिव्यक्ति। हम पाते हैं कि कुछ लोग तो योग्य हैं परन्तु कुछ अन्य बातें और दिखावा तो अधिक करते हैं परन्तु योग्य नहीं होते। अतः इस हृदय को स्वच्छ करें, सर्वोत्तम कोषाणु बनें।

अनियमित, अनुशासनविहीन हृदय अहम को बढ़ावा देता है। आप जो भी लोगों को बताते रहे, समझाते रहें; उस समय वे आपको गम्भीरता पूर्वक सुन लेंगे परन्तु अगले क्षण आपकी बात का उन पर कोई असर नहीं रहता। तो एक अन्य चीज़ हमने देखनी है और हमारे अन्दर भी यदि कोई कमी है तो वह है अनुशासन की। उस अनुशासन को हमें लाना होगा नहीं तो हमारी योग्यता न बढ़ पायेगी। परन्तु मैं सोचती हूँ कि इसके लिए हमारे अन्दर अन्तर्जात बुद्धि होनी चाहिए। शिक्षा नहीं, अन्तर्जात बुद्धि, यह समझने के लिए कि हमें हमारी योग्यता को सुधारना है। अब यहाँ हमारी आत्मा धड़कती है शक्ति नहीं। साक्षी, जो देख रही है वह परमात्मा का प्रतिबिम्ब है, जो कि देवी के कार्य का दर्शक है। वास्तव में उस अवस्था तक उन्नत हुए बिना यदि हम कहें कि हम भी आत्मा को देख रहे हैं तो हम वह योग्यता नहीं प्राप्त कर सकते। सारे आशीर्वादों – जैसे हृदय के सात परिमलें (औराज़) की तरह हमें सात आश्रम

प्राप्त हुए हैं। हम नहीं समझते कि हम सब को स्वयं को अनुशासित करना है। केवल लाभ उठाने के लिए, या यह दावा करने के लिए कि आप एक सहजयोगी हैं, यदि आप सहजयोग में हैं,तो यह हृदय का कोषाणु होने का चिन्ह नहीं।

अब चेतावनी देना आवश्यक है। इस अवस्था में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि अब सहजयोग उड़ान भर रहा है, याद रखें कि गति प्राप्त कर ली गई है और अब यह उड़ान भर रहा है। जो लोग पीछे छुट जाएंगे वे छुट जाएंगे। अतः अहंकार में न फंसे। आपका चरित्र पहले स्थान पर है– क्योंकि सभी लोग कहते हैं "वे अत्यन्त अहंकारी हैं।" नम्र बन कर समझें कि आपको यान के अन्दर होना है पीछे पृथ्वी पर नहीं रह जाना। यान द्रुतगति से चल रहा है।

अभी मैं ऊँचे दो चक्रों के विषय में बात नहीं कर सकती परन्तु हमें कम से कम सात चक्रों की बात तो करनी चाहिए। क्या इन चक्रों की शक्ति हम अपने अन्दर विकसित कर चुके हैं। हम ऐसा किस प्रकार कर सकते हैं? आपके पास समय नहीं है। आप सब व्यस्त लोग हैं। और अहंकारी। इन शक्तियों को विकसित करने के लिए अब हमें अपना चित्त इन चक्रों पर केन्द्रित करना होगा। जहां कहीं भी मैं गयी, जो प्रश्न पूछे गए और जिस प्रकार के लोग मुझे मिले, मैं आश्चर्यचकित रह गयी। किसी ने मुझसे अपने परिवार, घर, नौकरी या बेकारी आदि किसी व्यर्थ की चीज़ के बारे में नहीं पूछा। उन्होंने केवल यही पूछा कि श्रीमाताजी किस प्रकार हम फलां चक्र की शक्ति को विकसित करें? और मैंने उनसे पूछा कि आप किसी चक्र-विशेष की बात क्यों कर रहे हैं? कहने लगे कि "हमें लगता है कि हम में यह कमी है, विशेषकर के मुझमें यह चक्र ठीक नहीं है।"

अब सबसे अधिक सौभाग्यशाली बात यह है कि आज नवरात्रि है और मैं लन्दन में हूँ तथा नवरात्रि पूजा भी यहाँ होनी चाहिए। कोई अन्य देश इतना भाग्यशाली नहीं क्योंकि यह महानतम पूजा है, महानतम कार्य, जिसमें आप उपस्थित हो सकते हैं। हम नवरात्रि क्यों मनाते हैं? हृदय में नवरात्रि पूजा का अर्थ है सात चक्रों के अन्दर निहित शक्ति की अनुभूति करने के लिए आदिशक्ति की शक्ति को स्वीकार कर लेना। जब यह चक्र जागृत हो उठते हैं तो आप किस प्रकार अपने अन्दर इन नौ चक्रों की शक्ति की अभिव्यक्ति करते हैं। सात चक्र तो यह हैं और इनसे ऊपर दो चक्र और हैं, जैसा कि, हैरानी की बात है, ब्लेक ने स्पष्ट कहा कि "नौ चक्र हैं।"

एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को अनुशासित करने या यह सब बताने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि आज आपसे इस लहजे में बात करना मुझे अच्छा नहीं लगता। परन्तु मुझे लगा कि यदि आज मैंने आप को चेतावनी नहीं दी तो कल आप मुझे दोष देंगे। इसे गम्भीर चेतावनी समझें। आत्मसाक्षात्कार देने के बाद अब तुम्हें अनुशासित करने की मुझे बिल्कुल आवश्यकता नहीं क्योंकि आप को प्रकाश मिल गया है, आप जानते हैं कि आत्मसाक्षात्कार क्या है, आप आत्मसाक्षात्कारी होने का अर्थ जानते हैं, और आप यह भी जानते हैं कि आपको इससे कितना लाभ हुआ है तथा आपका व्यक्तित्व कितना निखरा है। परन्तु अभी भी करने को कुछ शेष है। आपको स्वयं देखना है कि क्या वास्तव में आपने स्वयं को अनुशासित कर लिया है या नहीं।

किसी अगुआ, आश्रम के साथी या किसी अन्य को आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं। आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं, आप अपने स्वामी हैं, अपने गुरू हैं। कल्पना कीजिए कि आप सब गुरू हैं, महान गुरू,सद्गुरू हैं, सम्मान जनक सन्त हैं जिन पर सभी देवताओं ने पुष्प छिड़कने हैं। इसकी कल्पना करें। लेकिन आप तो अक्खड़ता पूर्वक भाषण दे रहे हैं तथा बातें कर रहे हैं। देवताओं को भी लज्जित करने वाली बात है। उनकी समझ में नहीं आता कि क्या करें, आपको पुष्प माला अर्पण करें या आपका मुंह बंद कर दें। आप यहां इतनी महान स्थिति में हैं कि आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है। आपने केवल इस महायोग के सौन्दर्य को स्वीकार करना है, सातों चक्रों पर विद्यमान अपनी शक्तियों को ज्योतिर्मय करना है।

अज्ञानी लोगों की बात तो मुझे समझ आती है। परन्तु उस अज्ञानता में वे किस प्रकार अबोधिता की बात करेंगे? पर आप लोग तो मूर्ख नहीं हैं। आप तो ज्ञानमय हैं, आपको आत्मसाक्षात्कार मिल चुका है। अबोधिता की शक्ति अति महान है। यह आपको अत्यन्त निडर बनाती है, अहंकारी नहीं निडर। अबोधिता की सबसे बड़ी महानता यह है कि यह सम्मानमय होती है। सम्मान विवेक यदि आपमें विकसित नहीं हुआ है, सहजयोगियों, अन्य लोगों, आश्रम, अनुशासन तथा स्वयं के लिए यदि आप सम्मान भाव विकसित नहीं कर सके तो सहजयोग की बात तक करना व्यर्थ है। सम्मान-भाव तो इसकी शुरूआत है। ठीक है कि पहले आप सम्मान नहीं करते थे, अहँकारी थे, मूर्खों के स्वर्ग में रहते थे, सब क्षमा कर दिया गया। पर प्रकाश मिलने के बाद आप उन सारे सांपों को छोड़ दें जिन्हें अब तक पकड़े हुए थे। यह इतनी साधारण बात है।

आइए प्रथम चक्र को देखें। यह श्री गणेश की माँ- गौरी की शक्ति से सम्बन्धित है। गौरी की शक्तियाँ कितनी आश्चर्यचकित करने वाली हैं? उनकी शक्तियों के कारण ही आपको आत्म साक्षात्कार मिला। हमने उस शक्ति को अपने अन्दर सथापित करने के लिए क्या किया? आज नवरात्रि के प्रथम दिन हमें देखना चाहिए कि हमने क्या किया? क्या हम अपने अन्दर अबोधिता विकसित कर सके? बातचीत करते हुए लोग अत्यन्त कटु होते हैं। आप यदि अबोध हैं तो आपमें

कड़वाहट कैसे आ सकती है? वे अत्यंत अक्खड़ हैं। अबोध व्यक्ति कैसे अक्खड़ हो सकता है? लोग खेल खेलते हैं। अबोध यदि आप हैं तो आप यह कैसे कर सकते हैं? अतः आपको स्वयं देखना होगा कि यदि अबोधिता की शक्ति को जीवित रखना है तो बाकी सारी मूर्खताओं को त्यागना होगा। आप यदि अबोधिता चाहते हैं तो अबोधिता-विरोधी हर बात को छोड़ना होगा।

बाल सुलभ स्वभाव में ही आप गौरी के आशीर्वाद को प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा आपको यह सब बताना व्यर्थ है क्योंकि आप तो स्वयं को चतुर समझते हैं। चतुर व्यक्ति से बात करने का क्या लाभ है क्योंकि वो तो पहले से ही सब जानता है। अतः विकसित होते हुए सर्वप्रथम आप पृथ्वी माँ पर बैठना सीखें। धरा माँ का सम्मान करें क्योंकि पहला चक्र पृथ्वी तत्व से बना है। पृथ्वी पर आराम से बैठना सीखें और पृथ्वी का सम्मान भी। पेड़ों पर जब फूल आते हैं तो पेड़ इतने सम्मानमय नहीं होते पर जब पेड़ फलों से लद जाते हैं तो वे पृथ्वी माँ के सम्मुख झुक जाते हैं। इसी प्रकार सहजयोग के फल पाकर आपको भी नम्र हो जाना चाहिए।

अबोधिता में व्यक्ति को शान्त करने की शक्ति है। 'अत्यन्त शान्त'। क्रोध और हिंसा विहीन। अबोधिता विहीन व्यक्ति में शान्ति नहीं आ सकती। ऐसा व्यक्ति या तो धूर्त होता है या आक्रामक। उसका हृदय अशान्त होता है। पर अबोध व्यक्ति निश्चिन्त होता है और निश्छल जीवन यापन करता है। पूर्ण शान्ति पूर्वक रह हर चीज का आनन्द लेता है। चतुराई व्यक्ति के हिंसक बना देती है। स्वयं को अति चतुर मान कर वह अन्य लोगों को मूर्ख समझता है तथा उन पर चिल्लाना अपना अधिकार। कपटी व्यक्ति कभी बुद्धिमान नहीं होता चाहे देखने में वह ऐसा प्रतीत होता हो। अबोधिता ही विवेक की दाता है। आप लोगों ने कितना विवेक प्राप्त किया? व्यक्ति को इसका ध्यान रखना चाहिए।

हमें देखना चाहिए कि क्या हम स्वयं को अनुशासित कर पाये हैं? अनुशासन से ही हमारा उत्थान होता है। हमें बहुत विकसित होना है। अहंकार ग्रस्त व्यक्ति इस बात को नहीं समझते कि उन्हें उत्थित होना है, अभी तक उनका उत्थान नहीं हुआ। अभी आपको बहुत ऊपर उठना है। उत्थान होने पर आपका विवेक करूणा की सुगन्ध से महक उठता है।

अबोधिता की शक्ति बढ़ने पर विवेक दिखाई पड़ता है। लोग कहते हैं, "वह व्यक्ति अत्यन्त विवेकशील है। उदाहरणार्थ यदि कोई अपनी पत्नी के लिए रो रहा हो तो बुद्धिमान व्यक्ति कहेगा," ओ बाबा! इसकी ओर देखो, अभी तक अपनी पत्नी की चिन्ता में लगा है।" इन चीज़ों का कोई अन्त नहीं। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो सहजयोग पर एक-एक घन्टे का लम्बा भाषण दे सकते हैं। उसके बिना उन्हें लगता ही नहीं कि उनके अहं की तुष्टि हुई है। परन्तु विवेकशील व्यक्ति को कुछ कहना नहीं पड़ता। मौन से ही वह अपने विवेक की छाप दूसरे लोगों पर छोड़ता है।

आपको स्वयं को समझना है, केवल स्वयं को। अतः सब को प्रतिदिन ध्यान करना है। यही अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है जिसे उन सभी देशों के लोग कर रहे हैं जहां मैं नहीं होती। क्योंकि यदि मैं इंग्लैंड में हूँ तो वहाँ के लोग कहेंगे "माँ सब कुछ कर रही है।" अतः मैं प्रातः चार बजे उठती हूँ, स्नान करती हूँ और आप सब के लिए ध्यान करती हूँ। अच्छा हो कि मैं एक बार फिर से यह शुरू कर दूँ। क्योंकि आपके पास तो ध्यान करने के लिए समय ही नहीं है। कम से कम मैं तो आपके लिए ध्यान करूँ। अतः आप सब आज मुझे वचन दें कि आप प्रतिदिन ध्यान करेंगे। प्रातः उठें। "हम सुबह उठ नहीं सकते।" पूरा विश्व उठ सकता है तो अंग्रेज क्यों नहीं उठ सकते? वाटरलू के युद्ध में तो वे सब से पहले पहुँच गए थे। समय की पाबन्दी के कारण ही उन्होंने लड़ाई जीती। उनकी वक्त की उस पाबन्दी को आज क्या हो गया है? हम शराब नहीं पीते, उसका असर हम पर नहीं होता, रात को हम देर से नहीं सोते। तो क्यों न आज हम निर्णय करें कि "हर रोज प्रातः जल्दी उठकर मैं ध्यान करूँगा। ध्यान करते हुए मैं अपने पर चित्त दूंगा दूसरों पर नहीं। और स्वयं देखूंगा कि मैं कहाँ पकड़ रहा हूँ। कौन से चक्र पर मैं पकड़ रहा हूँ और मुझे क्या करना है?

अतः आज नवरात्रि के प्रथम दिन हमारे अन्दर गौरी की शक्तियों को प्रज्जवलित होना चाहिए और उनकी अभिव्यक्ति भी होनी चाहिए। ये शक्तियां असीम हैं। मैं इनका वर्णन एक भाषाण में नहीं कर सकती। आदि-कुण्डलिनी के बारे में सोचें। वह पृथ्वी माँ, पूरे ब्राह्माण्ड, पशुओं, भौतिक पदार्थों तथा मानवों में कार्यान्वित है। और अब वह आप में कार्य करती है। केवल इसी के निर्णय से ही आपको शक्लों-शरीर प्राप्त होंगे। वही निर्णय करती हैं कि आपको कौन सा बच्चा मिले। वही आपको इच्छित बालक प्रदान करती हैं। उन्होंने ही आपको ये सारे सुन्दर बालक प्रदान किये हैं। उन्होंने ही यह दैदीप्यमान चेहरे और आँखें आपको दी हैं। उन्होंने यह सब आपके लिए किया। परन्तु आपने अपने अन्दर की इस शक्ति की कितनी अभिव्यक्ति की?

आज सहजयोगी पूरे ब्रह्माण्ड तथा पूरी मानव-जाति के उत्थान के प्रतिनिधि हैं। क्या आप इस बात को समझ गए हैं कि इस संकटमय समय में, जबकि संसार विनाश के कगार पर खड़ा है, आप इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं? विलियम ब्लेक जैसे महान दृष्टाओं ने इस समय की बात की। उन्होंने इसे बनाया। परम्परागत रूप में हमने यह सब बनाया। सन्तों के कार्य ने ही इंग्लैंड को इस स्थिति तक पहुँचाया। अब क्या आप

जानते हैं कि इंग्लैंड के सहजयोगियों की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है? परन्तु विवेक के अभाव में, अक्खड़पने से, तथा आत्मा को समझे बिना आप कैसे इतनी ऊँची बात कर सकते हैं? आप स्वयं जब तक इतने दुर्बल तथा अहंकारी हैं तो सारी चीज़ों की व्यवस्था किस प्रकार कर सकते हैं?

निसन्देह आदिशक्ति कठोर परिश्रम कर रही है। परन्तु आप लोग, जिनकी कुण्डलिनी जागृत हो गई है, क्या कर रहे हैं? आपने बाह्य जगत में आदिशक्ति की कितनी बात की? कुण्डलिी क्या है? जैसे आप सर्व-साधारण रूप में जानते हैं यह 'शुद्ध इच्छा है।' अतः स्वयं को पूर्णत्व तक विकसित करने की शुद्ध इच्छा करें। वास्तव में यदि यह सच्ची इच्छा है तो कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं। बाकी सभी इच्छाएं दूसरे तथा तीसरे दर्जे की (गौण) हैं। उत्थान की इच्छा ही सर्वोपरी है। किसके हित के लिए? यह आपके हित के लिए है और आप के हित में पूरे विश्व का हित निहित है।

अतः आज मैं गिनती नहीं करूंगी कि कितने लोग प्रतिदिन ध्यान करते हैं और कितने नहीं करते। मैं आपको केवल इतना बता सकती हूँ कि जो लोग प्रतिदिन ध्यान नहीं करते, अगले वर्ष वो यहाँ नहीं होंगे। मेरी बात समझ लें, यह सत्य है। प्रतिदिन ध्यान अवश्य करें। स्वयं को अनुशासित करें। एक नये परिदृश्य में आप आ गए हैं। अब इस नये स्वपन को जब आप देखते हैं, इसे समझते हैं तो आप दूर नहीं खड़े रह सकते ..... इसमें उतरें।

सभी लोग कहते हैं कि श्रीमाताजी आप ने इन अंग्रेजों के लिए बहुत समय खर्च किया है। उनके लिए इतना समय क्यों खर्च किया? हो सकताहै कि आप लोग स्वयं को बहुत महान समझ रहे हों। जैसे मर्जी सोचिए। पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपका देश हृदय भूमि है इसलिए मुझे दूसरों की अपेक्षा आपको अधिक शुद्ध करना पड़ता है। परन्तु परिणाम उल्टा है। दूसरे लोग बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। उनकी लहरियां, उनकी संवेदना, उनकी सूझ-बूझ, जोकि उन्होंने अभी-अभी प्राप्त की है, उसको देखकर मुझे आश्चर्य होता है। परन्तु यहां पर यह बड़ी केन्द्रित सी चीज बनती जा रही है, सभी लोग सहजयोग को समझना नहीं चाहते वे केवल भाषण देना चाहते हैं। बड़ों के लिए कोई सम्मान नहीं है जिन्होंने पहले आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया वे स्वयं को बहुत ऊंचा समझते हैं। उन्हें ईसा का कथन याद रखना चाहिए कि "पहला ही अन्तिम होगा।" अतः समझने का प्रयत्न करें कि आपको ही विकसित होना है और आपने ही इन शक्तियों की अभिव्यक्तियां करनी है। शक्तियों की अभिव्यक्ति को, मैं नहीं जान पाई, आप कहां तक समझ सके हैं।

यहां इंग्लैंड में लोग कहते हैं, "मैंने उस व्यक्ति को छू लिया और अब मेरा अहंकार बढ़ गया है।" संवेदनशील होने का ये कोई तरीका नहीं है। आपको परमात्मा के प्रति संवेदनशील होना है,बुरी चीजों के लिए नहीं। परन्तु परमात्मा से एकाकारिता के स्थान पर हम बुरी चीजों के सम्मुख बहुत दुर्बल हैं। अतः अच्छाई को समझने की शक्तियां आपकी पहुंच में है, यह शक्तियां मात्र प्रशंसा बन कर नहीं रह जानी चाहिए, यह एक प्रकार की चुनौती, एक प्रकार की सुन्दर जिज्ञासा और विकास बन जानी चाहिए। जिन लोगों ने स्वयं को केवल लेबल लगाए हुए हैं उन्हें चेतावनी देनी होगी और बाद में उन्हें वर्जित कर दिया जाएगा। यहां पर चैतन्य लहरियों की दशा देखकर और अन्य चीजों को देखकर मुझे खेद होता है। आप लोग नहीं जानते कि इंग्लैंड के लोगों का सहज के प्रति पिकनिक जैसा रवैया देखकर मुझे बहुत दुख होता है। आपके प्रयत्नों की सराहना करने के लिए मैंने बहुत कोशिश की और सदा इसमें लगी रही। आप अब अपने अन्दर झांकिए।

जिस व्यक्ति में गौरी की शक्ति है वो जब किसी स्थान पर प्रवेश करता है तो प्रणाम करने के लिए सब की कुण्डिलनी उठ जाती है। जब आपमें गौरी की शक्ति आ जाती है तो आप विशेष बन जाते हैं क्योंकि आपमें पवित्र, अबोध सुन्दर लालच विहीन दृष्टि आ जाती है, आपकी आंखों में एक ऐसी चमक आ जाती है कि आपके कटाक्ष मात्र से तुरन्त कुण्डलिनी उठ जाती है। गौरी की शक्ति विकसित होने से ही कैन्सर आदि सभी बिमारियां तुरन्त ठीक हो सकती है। आपकी सारी समस्याएं हल हो सकती हैं। सारी बुराइयां भाग जाती है और सब प्रकार की नकारात्मकता को वश में करते हुए आप एक सुन्दर, सुगन्धित कमल बन जाते हैं।

"वही शक्ति बनें।" तत्व को देखें, अपने अन्दर झांके। आपके अन्दर छिपे हुए तत्व को सब लोग देखें। किसी मित्र, मंगेतर, पत्नी या पति की चिन्ता करना कोई उच्च स्थिति की बात नहीं। आपकी स्थिति बहुत नीची है और गिरती जा रही है। यह अच्छी बात नहीं है। मेरी करूणा और प्रेम यदि आपको बिगाड़ रहे है तो अच्छा होगा कि मैं यह सब आपको न दूं। अपनी योग्यताओं के कारण ही आप इस देश में जन्में हैं। महान ऊंचाइयां प्राप्त करने की योग्यता आपमें है। आप इन्हें प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु इनके बारे में केवल बातचीत करने से यह प्राप्त न होगी, उसके लिए आपको वह महान शक्ति बनना होगा। अतः वह शक्ति बने।

लोगों ने जो सामूहिक आर्शीवाद प्राप्त किये हैं उन्हें देखें। जब उन्होंने इनके बारे में मुझे बताया तो मुझे बहुत हैरानी हुई। उन्हें असीम आशीर्वाद मिले। तो यहां पर वह आशीर्वाद नहीं प्राप्त कर सकते? हमारे साथ क्या समस्या है? यदि हम सामूहिक नहीं हैं, अगर हममें परस्पर कोई समस्या है, तो इसका मतलब यह है कि हमारे बीच में अभी भी एक प्रकार का अहम् है जो हमें

सामूहिक नहीं होने दे रहा। अतः अब हम इस बात को अपने हृदय की गहनता में उतारें कि, "परमात्मा की कृपा से हम एक ऐसे समय पर जन्में हैं जब यह घटना घटित हुई, कि हम लोगों को परमात्मा के आशीर्वाद का लाभ मिला, कि हमें आत्म साक्षात्कार प्राप्त हुआ और हम इतना ऊंचा उठ पाये। अब हमें अपने पंख फैलाने चाहिए।

म्यूनिक में (अक्खड़पने के बाद) वे लोग गहन हो गये, अनेक बच्चे तक भी इतने गहन हो गये कि मेरे कहे एक-एक शब्द को सुनने लगे, मानो मोती चुन रहे हों। मेरे एक-एक शब्द को लिखने लगे। वे दृढ़ निश्चय वाले लोग हैं यदि एक बार उन्होंने अच्छे कार्य करने का निर्णय किया तो वे बहुत भले कार्य करेंगे। लेकिन यहां लंदन में मेरे जाते ही लोग कार्य की बातें करने लगते हैं। मैं इसके बारे में सुनती हूँ और लहरियों आदि से जानती हूँ। हम गहन नहीं है, गहनता को बढ़ाना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसी को श्रद्धा कहते हैं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि इस वर्ष आप सहजयोग को गहनता पूर्वक समझेंगे। हो सकता है कि भूतकाल में आपके साथ कोई समस्या रही हो आप बंधनों में फंसे हों या इसके बारे में बहुत अधिक सोचते हों। मैं यह कैसे कर सकती हूँ? आप कर सकते हैं। आप ही अपने भूतकाल को भूला सकते हैं। सहजयोग में भूतकाल का कोई अर्थ नहीं होता। आपका पूर्ण नवीनीकरण हो रहा है, आप बस अपना तन्त्र उपयोग करें। आपके तन्त्र को ठीक रखने के लिए मैं आपके साथ बहुत परिश्रम करती हूँ। परन्तु आपमें आत्म-विश्वास नहीं है और आत्म-विश्वास की कमी जिनमें होती है वे बहुत ही अक्खड़ होते हैं। अतः सर्वप्रथम स्वयं को आत्मा में स्थापित करो। अपने हृदय के अन्दर और अपनी शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न करो। अपनी आन्तरिक शक्तियों का, बोलने और दिखावा करने की शक्तियों का नहीं, आन्तरिक शक्तियों का।

हम अपने पंख काट रहे हैं। संकीर्ण बुद्धि व्यक्ति मत बनिए, छोटी-मोटी चीजों की चिन्ता छोड़ दिजिए, ये सब महत्वहीन है। यदि आप अपने पूर्व जन्मों की ओर देखें तो आपको पता लगेगा कि आप हर तरह के भोजन खा चुके हैं, हर तरह की यात्राएं कर चुके हैं, सभी प्रकार के विवाह करा चुके हैं और वो सभी मूर्खतापूर्ण कार्य कर चुके हैं जिनमें लोग अपना समय बर्बाद करते हैं। अब यह सब समाप्त हो चुका है। अब आप कोई नया कार्य करें। पूर्व जन्मों में आपके कितने विवाह हुए और आपने कितने आनन्द उठाए। अब इन्हें त्याग दीजिए। यह एक विशेष समय है। ऋतम्भरा का समय है जिसमें आपको विकसित होना है। इसका पूरा लाभ उठाना है। पूर्ण गहनता के साथ आपको सहजयोग करना है। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि आप सभी अपनी नौकरियां छोड़ दो या सभी कुछ छोड़ दो। यदि आप सहजयोग में गहन है तो आप हर चीज में गहन होंगे। परन्तु आपमें गहनता नहीं है। शर्मनाक बात है कि परमात्मा के मन्दिर में अभी तक भी लोग बुरी चीजों से ग्रस्त हैं। यह कैसे हो सकता है? वे बिल्कुल मौन रहते हैं या व्रत करते हैं। यह सब अनुशासनविहीनता है। अध्यात्मिक जीवन में ऊंचा जाने के लिए आपको चाहिए कि अपनी आत्मा से अनुशासन लें। तब आप स्वतः ही अनुशासित हो जाएंगे। आत्मा को स्वयं पर राज्य करने दें यह संभव है। बहुत थोड़े से समय में मैंने यह देखा है कि यह संभव है। मैं तो नाम भी नहीं जानती। पर यहां पर तो आप सबको आपके नामों से और आपकी चैतन्य लहरियों से जानती हूँ। और वे लोग इतने ऊंचे चले गये। आज का दिन एक महान दिन है, एक महान अवसर है। हाऊस ऑफ लार्डस (राज्य सभा) की तरह आप भी विशिष्ट व्यक्ति हैं। यह सत्य है, परन्तु एक दिन ऐसा आ सकता है जब हाऊस आफ लार्डस को पूर्णतः निषिद्ध कर दिया जाएगा। आपको देवताओं कि तरह व्यवहार करना होगा। अतः मेरी प्रार्थना है कि आप अनुशासन की पूजा करनी सीखें। मैं यह नहीं कहती कि 'ऐसा करें वैसा करें', आप जानते हैं कि क्या करना है। और सबसे बड़ी बात यह है कि आप मुझे यह न कहा करें, "मैं जानता हूँ, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था..." जब आप एक चीज को जानते हैं तो उसको करते क्यों नहीं? आप शक्तिशाली हैं आज पूर्ण आत्मविश्वास के साथ और अपने उत्थान पर विश्वास के साथ पूर्ण गहनतापूर्वक हम इस पूजा में भाग लें और अपने हृदय में निश्चय करें कि, "मैं स्वयं को अनुशासित करूंगा।" एक महान शक्ति के साथ नवरात्रि शुरू हो रही है। वेगशील चैतन्य लहरियों का लाभ उठाएं।

यह एक महान बात है कि इंग्लैंड में हम गौरी (वर्जिन) कि पूजा कर रहे हैं, जैसा कि आप जानते हैं, सहजयोग के अनुसार इंग्लैंड हृदय है, जहां आत्मा (शिव) का निवास है और इंग्लैंड में गौरी का सम्मान तथा पूजा होना सभी सहजयोगियों के लिए बहुत सम्मान की बात है। अब आप पूछ सकते हैं कि गौरी को इतना सम्मान क्यों दिया जाता है? एक कुमारी को इस सीमा तक सम्मान क्यों दिया जाता है? एक कुमारी कि क्या शक्तियां हैं? वह ईसा मसीह जैसे महान शिशु को जन्म दे सकती है, अपने शरीर के मल से वह श्री गणेश की रचना कर सकती है और अपने अहम् विहीन बच्चों की अबोधिता तथा प्रगलब्धता (गतिशीलता) की रक्षा कर सकती है। अतः यह शक्ति उसी व्यक्ति में निवास करती है जिसके बहुत से पूर्व पुण्य हों, जिसने पूर्व जन्मों में बहुत से अच्छे कार्य किए हों, जिसने यह समझ लिया हो कि कौमार्य अवस्था (पवित्रता) सभी शक्तियों से शक्तिशाली है और जिसने अपनी कौमार्य अवस्था और पवित्रता कि रक्षा जी जान से की हो। आप जानते हैं कि हमारे शरीर में गौरी कुण्डलिनी के रूप में स्थापित की गयी है अर्थात् वे गौरी

(वर्जिन) हैं। वह अछूती है। आत्मा बनने की इच्छा भी निर्मल है। उसमें कोई मल नहीं। यह शुद्ध इच्छा है। परमात्मा से एकाकारिता के सिवाय कोई और इच्छा नहीं शेष सभी इच्छाएं समाप्त हो गयी हैं।

आप आशिवार्दित हैं। अतः शिकायत करने तथा आक्रमक होने के स्थान पर आप जान लें कि यह आप पर महान कृपा हुई है। महानतम कृपा की आपको पूर्ण क्षमा दे दी गयी है और इस कृपा का आशीर्वाद आपको दे दिया गया है। इसके स्तर पर आने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। दोष भाव ग्रस्त हो कर नहीं, नम्र और कृतज्ञ होकर। अपने सारे कुकृत्यों के बावजूद भी आज हम देवताओं के समान बैठे हुए हैं। सोमरस, चरणामृत, श्रीमाताजी के चरण कमलों का धोवन, पीने की केवल आप लोगों, देवताओं को ही आज्ञा है। उस श्रेणी में आप बैठे हुए हैं, फिर भी आप इतनी मांगें कैसे कर सकते हैं?

आप में से किसी में भी, स्त्री या पुरूष, मैं नहीं चाहती दोष भाव विकसित हों। यह मैं नहीं चाहती क्योंकि दोष भाव सबसे बड़ी बुराई है जो कि आगे चलकर आपको विपरीत दिशा में ले जाती है। इससे कोई सहायता नहीं मिलती। जब हमें यह पता चले कि हममें यह समस्याएं हैं तो इन के प्रति हमें नम्र हो जाना चाहिए। दोषभाव पूर्ण नहीं, नम्र। आप यदि सहजयोग के प्रति नम्र नहीं हैं और अक्रामकतापूर्वक कहते हैं कि आपको सहजयोग से क्या मिला और बिना अपने पुण्यों को देखे इसकी शिकायत करते हैं तो लाभान्वित होने का क्या अधिकार है? आपकी सभी खामियों के बावजूद आपकी कुण्डलिनी उठा दी गयी। यह बात आप जानते हैं।

देवों की तरह आप और हम बैठे हुए हैं। आपको अपने आप को विनम्र करना होगा, अपने भूतकाल को अपनी गलतियों को देखते हुए। इस कार्या में मैं आपके साथ हूँ। दोषभाव ग्रस्त न हो। इसका सामना करने को प्रयत्न करे। जैसे भी हम हैं हमें अपना सामना करना है। जब हम अपनी अबोधिता और कौमार्य अवस्था खो दते हैं तो सर्वप्रथम हम अहम् ग्रस्त हो जाते हैं, और सोचने लगते हैं कि बुराई क्या है? आपकी कुण्डलिनी ही आपकी शक्ति है और वह पवित्रता है। वही आपकी शक्ति है। अबोधिता ही आपकी शक्ति है। और जिस दिन आपने इसे खो दिया उसी दिन हमने प्रथम पाप किया। इसके प्रति नम्र होकर कुछ प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। क्या? साम्राज्य और ऐश्वर्यपूर्व जीवन नहीं प्राप्त करना, शिव की इस पवित्र भूमि में एक स्थान प्राप्त करना है।

शिव क्षमा रूप हैं। वे सब को क्षमा कर देते हैं। राक्षसों को भी क्षमा किया जा सकता है, पर क्या उन्हें साक्षात्कार दिया जा सकता है? पिशाचों (स्त्री राक्षसों) को भी क्षमा किया जा सकता है। लेकिन क्या उन्हें आत्मसाक्षात्कार दिया जा सकता है? क्षमा एक अन्य बात है? क्षमा इसलिए दी जाती है कि शिव की क्षमा से वे अधिक समय तक जी सकें, पर उसका क्या लाभ है? ये जीवन कितना दयनीय है। अबोधिता विहीन लोग आनन्द प्रदायक नहीं हो सकते। वे स्वयं दयनीय होते हैं और दूसरों को भी दुखी करते हैं। अक्खड़पना बालसुलभ गुण नहीं है हमें बच्चों की तरह से होना है। परन्तु आप शिशुवत नहीं थे फिर भी आपको आत्मसाक्षात्कार दिया गया। परन्तु अब आप देवों के साथ बैठे हैं, उनसे भी ऊंचे। तो हमारी शोभा क्या है? नम्रता, सादगी। चतुराई, अहंकार दूसरों का अपमान, दिखावा, हमें शोभा नहीं देते; पूर्ण समर्पण और अपने अहंकार का त्याग ही हमारी सज्जा है।

गौरी उन विचारों को स्वीकार नहीं कर सकती जो शाश्वत नहीं है। गौरी की यह विशेषता है क्योंकि वो स्वबाव से शाश्वत है। आपके अबोध बनते ही मनुष्य को मनुष्य से पृथक करने वाले सभी अवगुण जैसे धर्मान्धता, जातीयता और कौम का अहम आदि सभी समाप्त हो जाते हैं। परन्तु व्यर्थ की बातों को अपने मस्तिष्क में स्थान देने से आप अबोध नहीं बन सकते। कुण्डलिनी कि जागृति से निसन्देह, आप अबोधिता को प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु इस अवस्था को बनाए रखने के लिए आपकी उन्नति आन्तरिक होनी चाहिए, बाह्य नहीं। अपनी जड़ों को खोजें, कुण्डलिनी आपका मूल है, आपके अस्तित्व की जड़ें हैं। वही आपकी नींव की अभिव्यक्ति करती है अतः आपका चित अपनी जड़ों की ओर होना चाहिए अपनी कोपलों की ओर नहीं। अपना सामना करें और अब अपनी जड़ों को विकसित करें। आप देख सकते हैं कि सारा पश्चिमी समाज आधारविहीन है। आज क्योंकि मैं भी तुम्हारे साथ हूँ तो पश्चिमी होने के कारण, हमने अपनी जड़ों को खो दिया है। आइये हम इसका सामना करें। हमें अपनी जड़ों को खोजना है।

अपने अन्दर कौमार्य अवस्था को पुर्नजन्म लेने दें। आज का दिन हमारे लिए नववर्ष का दिन है, तो आज आप सबको शपथ लेनी होगी कि, "अपने भयंकर क्रोध, रौबिले स्वभाव, जोरदार आचरण, अहं चालित कठोरता एवं दूसरों पर प्रभुता जमाने की प्रवृति का हम त्याग करेंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि इन दुर्गणों का क्या लाभ है। जब तक आप इनका समर्पण नहीं करते तो गौरी एवं श्रीगणेश आपके अगन्य चक्र को नहीं खोलेंगे। हमारे पूर्वकर्मों से हमें समझ आ जानी चाहिए कि हमें परस्पर एवं दूसरे सहजयोगियों से नम्र, करूणामय, प्रेममय होना है तथा कितना शाश्वत हमें बनना है।

किसी जड़ विहीन पेड़ को देखिये। यह सूख जाता है, छाया नहीं देता और मृत सम होकर गिर जाता है। इस पर कांटे निकल आते हैं। यह उस मरूस्थल की तरह हो जाता है जिसमें केवल कांटे ही उग सकते हैं। जब पूरा समाज इतना मूर्ख हो जाता है कि

एक दूसरे से घृणा करने लगे और भौतिकतावादी बन जाए तो वहां कमल और गुलाब के फूल नहीं खिल सकते। परन्तु आप सब तो इस देश के कमल हैं। यह ठीक है कि आपने कीचड़ में जन्म लिया परन्तु अब स्वयं में लौट आइये। आप सुन्दर थे, कमलसम थे, कीचड़ में गिरकर कीचड़ जैसे हो गये परन्तु अपने सच्चे स्वभाव के कारण आप उस कीचड़ से बाहर निकल आए हैं। आप कमल तो बन गये हैं परन्तु सुगन्ध अभी भी नहीं है। सुगन्ध विहीन कमल की बात समझ में नहीं आती। कमल में तो सुगन्ध होनी ही चाहिए। वह सुगन्ध जो इस कीचड़ कि गन्दगी पर छा जाए। आपको भारतीय सहजयोगियों से भी अधिक विकसित होना होगा। परन्तु यहां के लोगों की अक्खड़ता को देखकर तो मैं आश्चर्यचकित रह जाती हूँ। वो सदा शिकायतें ही करते रहते हैं। वे स्वयं को क्या समझते हैं। आप कौन हैं? जड़ों के विकसित न हो पाने की वजह से यह सब है।

एक बार जब आप अपनी जड़ों को विकसित कर लेंगे तो आपके स्वभाव में तुरन्त ही नम्रता आने लगेगी। अभी तक बनावटी नम्रता है जो कि हृदय से नहीं है। जब आप अबोध बन जाएंगे, पवित्र बन जाएंगे तब ये अस्वाभाविक नहीं रहेगी। अबोधिता का अर्थ केवल चरित्र से ही नहीं होता, इसका अर्थ अभौतिक दृष्टिकोण भी है। लोगों के लिए बच्चों से अधिक कालीन महत्वपूर्ण है। भौतिकता आप पर और आपकी अबोधिता पर आघात है।

अपने जीवन में मैंने देखा है कि वस्तु यदि आप किसी को भेंट कर सके तो वह आपको अधिक आनन्द प्रदान करती है। देने में मुझे लेने से अधिक आनन्द आता है। आप भी ऐसा करके देखें। किसी चीज से पीछा छुड़ाने के मक्सद से आप उसे उपहार में न दें। स्वामित्व भाव दासता मात्र है। यह आपके उत्थान में बाधा है।

भौतिकता यदि अमृत से परिपूर्ण उस प्याले की तरह है जो प्रेमामृत प्रदान करता है तो ठीक है। परन्तु आप प्याले को तो नहीं खा लेते? भौतिकता से मुझे ऐसा लगता है जैसे लोग अमृत को छोड़ प्याले को खा लेते हैं। कप अधिक महत्वपूर्ण है या अमृत? सोने के प्याले में यदि विष भरा हुआ हे तो क्या आप उसे खा लेंगे। क्या कोई जान बूझ कर सोने के प्याले में जहर पी लेगा? विवेक का अभाव है। अर्थ शास्त्र का मूल-सिद्धान्त है कि भौतिक वस्तुएं आपको प्रसन्नता नहीं प्रदान कर सकती।

मेरी अबोधिता मुझे उन स्थानों पर ले जाती हैं जहां भेंट योग्य वस्तुएं मिलें। क्योंकि मैं इन्हें भेंट कर पाती हूँ इसलिए मुझे बहुत आनन्द मिलता है। आत्मा की वास्तविक शक्ति, कौमार्यावस्था (पावित्र्य) के अभाव के कारण ही आपने आनन्द विवेक को खो दिया है। आप लोग आनन्द के हत्यारे हैं। सुबह से शाम तक अपनी जबान से कठोर शब्द कह-कह कर आप एक दूसरे के आनन्द की हत्या करते हैं। आपके सम्मुख हाथ जोड़ते हुए मुझे लगा कि कहीं इससे आप को दुःख न पहुचे, इसलिए मैंने हाथ नीचे कर लिए। अपनी दोनों हथेलियों के बीच मैंने, बड़ी सावधानी पूर्वक आपका हृदय पकड़ा हुआ था ताकि इसे चोट न पहुँचे।

जबान से किसी को चोट पहुचाते हुए व्यक्ति ये नहीं जानता कि वह अपने अन्दर घृणा की कितनी लहरियां बना रहा है। लोगों को प्रेम करने के लिए मुझे प्रतिदिन चौबीस घंटे भी कम पड़ते हैं। साठ वर्ष की आयु में भी मुझे लगता है कि मैं उतना प्रेम नहीं दे पाई जितना मुझे देना चाहिए था। प्रेम का बहाव इतना तेज है कि इससे मेरे शरीर में कष्ट हो जाता है और कभी-कभी तो मैं स्वयं को कोसती हूँ कि प्रेम का इतना अधिक वजन मैं क्यों ढो रही हूँ? पूजा के बारे सोच कर भी कई बार मुझे घबराहट होती है कि अब क्या होगा। कभी कोई प्रश्न करता है कि "श्री माता जी क्या हम चैतन्य लहरियों को नहीं सोख पाये?" यह स्पष्ट है पर मैं इसे कहना नहीं चाहती। क्योंकि यदि मैं ऐसा कहूँगी तो आपकी विशुद्धि पकड़ जाएगी। तब आप लहरियों को उतना भी नहीं सोख पाएंगे।

अब समय आ गया है। अपने सदाचरण से आप लोग ही परमात्मा का मस्तिष्क परिवर्तन करेंगे। क्रोधमय परमात्मा का। आप लोग ही उसे प्रसन्न करेंगे। इस पाश्चात्य विश्व में और कौन उसका अधिकारी होगा? बाकी लोगों के हितार्थ करूणा के देवता को जागृत करने के लिए आप लोगों को विशेष रूप से चुना तथा तैयार किया गया है। सहजयोग प्रचार कार्य में अक्खड़पने का क्या परिणाम हुआ। एक कार्य क्रम में एक हजार लोग आये और अनुवर्ती (फोलोअप) कार्यक्रम में केवल तीन लोग। मैंने अपना बहुमूल्य समय अधिकतर इसी देश (इंग्लैंड) तथा पश्चिम में ही बिताया है। इसके बावजूद भी यहां का अहंकार मुझे आश्चर्य चकित कर देता है। इतना अहं-भाव है कि कभी कभी तो वो मेरे प्रति भी अक्खड़ होते हैं। मेरे साथ उनकी बातचीत तथा व्यवहार मुझे समझ नहीं आता।

मुझे अत्यन्त नाजुक कार्य करना है। आप पहले से ही जख्मी लोग हैं क्योंकि आपने स्वयं को आहत किया है। किसी और ने आपको आहत नहीं किया। हर सम्भव तरीके से आपने स्वयं को चोट पहुँचायी। चोट के कारण आप में दोष भाव आ गया और अब आप दूसरों को आहत कर रहे हैं। स्वयं को चोट न पहुँचायें। दूसरों के प्रति कठोर होना आपका कार्य नहीं है। आपको मधुर एवं करूणामय होना होगा। मनोवैज्ञानिकों के बहकावे में न आयें कि यदि आप कठोर नहीं होंगे तो दूसरे लोग आपका अनुचित लाभ उठाएंगे। पश्चिम के लोगों का कौन लाभ उठा सकता है? जिन्होंने पूरे विश्व के साथ अन्याय किया है वे यदि ऐसा कहें तो बड़ा विचित्र लगता है। उनकी बात मेरी समझ से बाहर है।

अक्खड़पना कहीं भी और कभी भी हो सकता है। बैल्जियम में मैंने पाया कि वहां की गृहणियाँ बर्तानियां की गृहणियों से भी अधिक अक्खड़ हैं। बड़ी भयंकर स्त्रियां है। प्रेम-स्नेह का नितान्त अभाव है उनमें। हर समय भौतिकता का प्रदर्शन। अत्यन्त शुष्क स्वभाव है। पर वे आत्मसाक्षात्कार पा कर महान होना चाहती हैं। मैं उन्हें समझ नहीं पाती।

आज पावित्र्य का दिन है। मुझे इंग्लैंड की स्त्रियों से बहुत आशा है। पुरूष यहाँ बिल्कुल नहीं बोलते। बैल्जियम के पुरूषों का तो जैसे स्त्रियों ने गला ही घोंट दिया हो। उस देश का अन्त क्या होगा? पर वहाँ की स्त्रियों ने क्या पा लिया है? यहाँ भारत में कम से कम एक स्त्री तो प्रधान मन्त्री हैं। वो क्या हैं। व्यर्थ, घर में बर्तन मांजती हैं और हेकड़ी जताती हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि वे क्या त्याग कर सकती हैं।

सहजयोग में एक नया पृष्ठ खुल चुका है। इसके विषय में आपको चेतावनी देना आवश्यक है। सहजयोग से स्वतन्त्रता न लें। आप किसी और पर अहसान नहीं कर रहे। सावधान रहें। मेरी चेतावनियों को गम्भीरता पूर्वक लें। आप सब को ठीक से विकसित होना होगा। केवल मेरी पूजा से लाभ न होगा। अच्छा हो कि अब आप अपनी पूजा करें। अपने अन्दर स्थित सभी देवताओं की आपको पूजा करनी होगी। उन्हें शुद्ध करें। सर्वप्रथम नम्रता, अबोधिता तथा सहजता के देवी देवता हैं। उनकी पूजा करें। उनकी पूजा किए बिना आप आगे नहीं बढ़ सकते। आपकी रक्षा भी नहीं की जाएगी।

त्याग से ही स्त्री पहचानी जाती है। यह चुनौती है। आप सब आत्मसाक्षात्कारी स्त्रियों को मेरी सलाह है कि स्वयं को नम्र बनाएं। किस लिए आप हर बात पर जोर डालती हैं? किसलिए? अहंग्रस्त तथा गलघोटी व्यक्तियों का गौरी पूजा कर पाना असम्भव है। गौरी अत्यन्त सहज हैं। अत्यन्त सहज। वह आपकी योजनाओं को नहीं समझती। उसका पावित्र्य ही उसका महत्व है। उसे वह जानती हैं तथा उस पावित्र्य को छूने की आज्ञा वे किसी को न देंगी। यही उनकी सम्पत्ति, वैभव तथा महानता है। वे नम्र हैं क्योंकि उन्हें किसी का भय नहीं है। वे आक्रमक नहीं है। वे किसी को आक्रामक नहीं होने देती। वास्तव में पवित्र स्त्री के प्रति आक्रामक होने का कोई दुःसाहस नहीं कर सकता।

मैं फिर कह रही हूँ कि सहजयोग से आजादी न लें। इसने सारे आशीर्वाद आप को दिये हैं। सूर्य की रोशनी आपने देख ली है। रात का सामना करने के लिए भी तैयार रहें। कोई भी आजादी लेने का प्रयत्न न करें। स्वयं को सुधारने का प्रयत्न करें। आश्रम में रहते हुए कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। आश्रम आपकी सुविधा के लिए नहीं है। समझ लें कि किसी को आपकी आवश्यकता नहीं है। यदि आप साधक हैं, अपनी जड़ों को खोजना चाहते हैं तो आपको स्वयं की आवश्यकता होनी चाहिए। आपके लिए सभी कुछ उपलब्ध है। परन्तु आपको नम्रता पूर्वक जड़ों में जाना होगा, अहं पूर्वक नहीं।

यह समझना हमारे लिए आवश्यक है कि हम उन्नति क्यों नहीं कर पा रहे। वास्तव में आत्म-विश्वास की कमी के कारण ही व्यक्ति अक्खड़ हो जाता है। जिनके 'आत्म' की अभिव्यक्ति नहीं हो रही उनका आत्म विश्वास लड़खड़ा जाता है। अपने आत्म की अभिव्यक्ति होने दें। आत्म अभिव्यक्ति के अभाव में ही सभी प्रकार की समस्याएं होती हैं और तब आप शिकायत करते हैं। जरा सोचिए कि जिस परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की, जिसने इतने प्रेम से आप सब को बनाया, आपको सब कुछ दिया, जिसने आपको आत्मसाक्षात्कार प्रदान किया, आत्मा रूप में आपको प्रकाश दिया, हर सम्भव चीज़ दी, आप उसी को शिकायत कर रहे हैं। आप अपने बारे में शिकायत न करें कि "मैं ठीक नहीं हूँ, मुझे ठीक होना चाहिए।' अपना सामना करें।

बहुत से लोग जिन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं मिल पाता वे अत्यन्त गर्व से कहते हैं "मुझे कुछ नहीं अनुभव हुआ, माँ कुछ नहीं है।" उन्हें लज्जा आनी चाहिए कि उनमें कुछ कमी है। वह कमी ठीक होनी चाहिए। विवेक अबोधिता का एक हिस्सा है। ग्रामीण, सहज लोगों में पूर्ण विवेक मिलता है। आप यदि उन्हें मूर्ख बनाने की कोशिश करें तो अन्त में आपको लगेगा कि "मैं स्वयं ही बहुत बड़ा मूर्ख हूँ।" कोई पढ़ा लिखा व्यक्ति यदि किसी ग्रामीण को बेवकूफ बनाने का प्रयत्न करे तो वह पाएगा "कि पृथ्वी पर वह स्वयं सबसे बड़ा मूर्ख पैदा हुआ है।" विद्वान यदि नम्र नहीं तो उसे विद्वान नहीं कहा जा सकता।

आप अपनी आत्मा हैं अतः स्वयं को आत्मा रूप में देखें। आत्मा शाश्वत है, अबोधिता है, आपके अन्तः स्थिति गौरी है। इसका सम्मान करें, अपने अन्दर विद्यमान गौरी का सम्मान करें। यदि यह आपके अन्दर न होती तो मैं आपको आत्म साक्षात्कार कभी न देती। सारे आघातों के बावजूद भी यह अन्दर विद्यमान है। विश्वास करें कि इसके अस्तित्व के अभाव में आपको आत्मसाक्षात्कार न मिल पाता।

सहजयोग प्रणाली (विद्या) में हम जितने पारंगत हों उतना ही नम्र हमें होना होगा। यही (नम्रता) हमारी सज्जा है, प्रमाण पत्र है तथा मानव अंस्तित्व में प्रवेश पथ है। अन्य साधकों के समीप जाने का यही मार्ग है। नम्र होना, नम्र होने की विधियां खोज निकालना ही 'निर्मल विद्या' की कुँजी है : "नम्र किस प्रकार हों।"

अबोधिता आपको आनन्द लेने की शक्ति प्रदान करती है। जैसे मुझे कभी भूतों के साथ खाना पड़ता है और कभी भूतों को खाना पड़ता है जो कि बहुत कठिन है। अतः भूतबाधित लोगों का आप भी बुरा न मानें। यदि वे अक्खड़ हैं तो उन्हें बन्धन दें और

इन सारी विधियों से उन्हें वश में करने का प्रयत्न करें। परन्तु यदि आप सोचें कि बहस करके आप उन्हें सम्हाल लेंगे तो असम्भव है। अतः निर्मल विद्या का उपयोग करें जो कि नम्रता है। जो चैतन्य लहरियों की मज्जक ढाल है (Myelin Sheath)। हर नाड़ी पर जैसे मज्जक ढाल होती है, इसी प्रकार नम्रता भी मज्जक ढाल है। यदि आप नम्र हैं तो युद्ध जीत लेंगे, नहीं तो आप खो जाएंगे। यदि आप नम्र हैं तो सभी कुछ आपके लिए एक मज़ाक बन जाएगा। यदि आप नम्र हैं तो आप मूर्खों, भूतों तथा अक्खड़ लोगों को इस नाटक के विदूषक के रूप में देख सकते हैं।

तो अपने अन्दर गौरी की पूजा करें। अपने पावित्र्य की किरण रचित हीरे पर बैठने के लिए हम स्वयं को उन्नत करें। दूसरे लोगों से आप नाराज हो सकते हैं पर सहजयोगियों और मुझ से नहीं हो सकते। आवश्यक होने पर ही दूसरों से नाराज हो सकते हैं। परन्तु यदि आप परस्पर लड़ते हैं और दूसरों को सहजयोग के बारे में बताते हैं तो कोई आपका विश्वास नहीं करेगा।

अपनी आत्मा तथा मेरे साथ नम्र होने का प्रयास करें। मेरे प्रति नम्र होना अत्यन्त आवश्यक है। आपको समझना चाहिए कि ईसा ने आप पर 'सावधान' रहने की शर्त रखी है। मेरे से व्यवहार करते हुए किसी भी प्रकार से अभद्र न हों। इस मामले में मैं विवश हूँ। जब तक आप मेरे प्रति नम्र हैं सभी कुछ मेरे वश में होता है। पर आपके अभद्र होते ही कोई और, हजारों, बागडोर सम्हाल लेते हैं। तब आप मुझे दोष न दें। मेरे आश्रित होने के कारण आप मेरी सुरक्षा में हैं। अपनी छत में सुराख कर के यदि आप कहें कि अन्दर बारिश आ रही है तो मैं इसका क्या कर सकती हूँ? मेरा अभिप्राय यह है कि आप अपनी छत में छिद्र कर चुके हैं। अब तो अन्दर वर्षा आएगी ही। अब भी यदि आप कहें कि छत वर्षा से आपको बचाए तो मैं कहूंगी कि आपमें विवेक की कमी है। तो यह एक अन्य चेतावनी है।

आज के दिन कुमारी गौरी ने शिव की पूजा शुरू की थी। एक शिवलिंग बना कर वह उस पर अपना कुमकुम डाल रहीं थी कि "मेरे आपसे मिलन के इस प्रतीक की आप देख भाल करें। इसका भार मैं आप पर छोडती हूँ। "मैं आपके प्रति समर्पण करती हूँ, आप मेरी रक्षा करें।" इसी प्रकार गौरी, आपकी कुण्डलिनी, आत्मा के प्रति समपर्ण करती है। "अब आप इस योग की रक्षा करें। मैं शेष सब भूल जाती हूँ। इसे मैं आपके हाथों में सौंपती हूँ। मुझे ऊपर उठाइये, मुझे उन्नत कीजिए। अपने पुराने अस्तित्व को मैं भुलाती हूँ। मैंने सभी कुछ छोड़ दिया। मेरी एक मात्र इच्छा है कि अधिकाधिक ऊँचा उठाइए। मुझे अपने में विलय दे दीजिए। बाकी सब महत्वहीन है। इस इच्छा की शेष सभी अभिव्यक्तियां समाप्त हो गई हैं। मेरी आत्मा, अब मैं पूर्णतया आपके प्रति समर्पित हूँ। मुझे और ऊँचा उठाइए। और ऊँचा, उन सब चीजों से दूर जो आत्मा न थी। मुझे पूर्ण आत्मा बना दीजिए, केवल आत्मा।"

सभी कुछ भुला दीजिए। उस बुलन्दी, उस उत्थान को पाने की गति बहुत बढ़ जाती है। इसी क्षण और सदा, जो आत्मा नहीं है उसे यदि आप छोड़ दें तो आप ऐसा कर सकते हैं। आत्म विरोधी चीजों को छोड़ना आवश्यक है। यही शुद्ध इच्छा है, यही कुण्डलिनी है, यही गौरी है। यही आत्मा से पूर्ण एकाकारिता है। बाकी सब सारहीन तथा व्यर्थ है। उत्थान ही महत्वपूर्ण है। आपकी जो सम्पत्ति हो, किसी से भी आप विवाहित हों, कहीं भी आप कार्य करते हों, आप किसी भी देश के हों– आप आत्मा हैं। यदि आप उन्नत हो जाते हैं तो आप परमात्मा के सुन्दर साम्राज्य में रहेंगे जहां सारी कुरूपता समाप्त हो जाती हैं। जैसे कमल खिलने पर सारा कीचड़ झड़ जाता है। इसी प्रकार मेरे बच्चे भी सदाशिव के सुन्दर चढ़ावे बनें।

मैंने भारतीय सहजयोगियों को बताया है कि वे पश्चिम की अहं चालित समाज की नकल न करें। वहां लोग कटु शब्द उपयोग करते हैं। ऐसा करने से हमें लगता है कि हमने अपना आधुनीकरण कर लिया है। वे कटु शब्द उपयोग करते हैं, "मैं क्या चिन्ता करता हूँ?" इस प्रकार के वाक्य हमने कभी उपयोग नहीं किए। ये हमारे लिए अपरिचित हैं। किसी को ऐसा कहना अभद्रता है। आप किस प्रकार कह सकते हैं कि "मैं आपसे घृणा करता हूँ।" लेकिन यहां मैंने लोगों को कटु शब्द बोलते देखा है। हम इस प्रकार बात नहीं करते। यह बात करने का तरीका नहीं है। अच्छे परिवार का कोई भी व्यक्ति इस प्रकार नहीं बोल सकता क्योंकि इससे परिवार का पता चलता है। जिस प्रकार यहां बसों, टैक्सियों आदि में लोग बात करते हैं उस पर मुझे हैरानी होती है। अतः मैंने उनसे (भारतीयों से) कहा है कि भाषा प्रेममय तथा परम्परागत होनी चाहिए।

श्री महालक्ष्मी पूजा
दिल्ली – 3.11.1986

इस नव वर्ष के शुभ अवसर पर दिल्ली में हमारा आना हुआ और आप लोगों ने जो आयोजन किया हुआ है ये एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना होनी चाहिए। नव वर्ष जब शुरू होता है तो कोई न कोई नवीन बात, नवीन धारणा, नवीन सूझबूझ मनुष्य के अन्दर जागृत होती है। वो स्वयं होती है। जिसने भी नवीन वर्ष की कल्पना बनाई है वो कोई बड़े भारी दृष्टा रहें होंगे कि ऐसे अवसर पर प्रतीक रूप में मनुष्य के अन्दर एक नई उमंग, एक नया विचार, एक नया आन्दोलन, जागृत हो जाए। ऐसे अनेक नवीन वर्ष आए और गए, नई उमंगे आई, नई धारणाएं आई, और खत्म हो गई। मनुष्य की आज तक की जो धारणाएं रही है, एक परमात्मा को छोड़कर बाकी सब मानसिक क्रियाएं या बौद्धिक परिक्रियाएं थी। मनुष्य अपनी बुद्धि से जो भी ठीक समझता था उसका आन्दोलन एक नवीन कल्पना समझकर के बना। वो आन्दोलन कुछ दूर तक जा के फिर न जाने क्यों हटा और उसी विशेष व्यक्ति को और उसी समाज को या उस समय में रहने वाले लोगों पर आघात पहुंचा। इसका कारण क्या था ये लोग नहीं समझ सके। लेकिन आज हमें इसका साक्षात बहुत ज्यादा अधिक स्पष्ट रूप से हो रहा है। जैसे कि धर्म की व्यवस्था हुई। धर्म की व्यवस्था में मनुष्य ने जब भी बुद्धि और मानसिक शक्तियों का उपयोग किया, तो बुद्धि के दम से वो एक वाद विवाद के क्षेत्र में बंध गया और अनेक वाद विवाद शुरू हो गए। गर सत्य एक है... तो पन्थ इतने क्यों हुए इतने धर्म क्यों हुए, उन धर्मों में भी इतने जाति भेद क्यों हो गए हैं ऐसे भेद करते-करते न जाने दुनिया में कितने ही गुट जम गए हैं जिसका समझ में नहीं आता है। किसी से पूछते हैं कि आप साहब कौन धर्म के हैं तो आपको ऐसे धर्म का नाम बताएंगे जो आपने कभी सुना ही नहीं। ऐसे नए धर्म मेरे ख्याल से हरेक नवीन वर्ष में ही उत्पन्न होते ही रहते हैं क्योंकि मनुष्य की बुद्धि, हर एक नवीन वर्ष में कोई न कोई नई उमंग लेकर पैदा हुई। इसी प्रकार हमारी बुद्धि से राजनैतिक क्षेत्र में भी उमंगे आई और नित नई-२ बातें बताई जैसे शुरूआत में माना गया कि चलो एक राजा ही रहे तो अच्छा है। राजा सबको समझ लेगा और राजा से ही सबको बड़ा लाभ होगा। तो देखा जिसको राजा बनाया वही दुष्ट निकला, उसी ने सताना शुरू कर दिया। फिर कहा राजा तो ठीक नहीं इसकी जगह ऐसा करो कि प्रजातन्त्र की व्यवस्था करो। फिर उन्होंने प्रजातंत्र की स्थापना की। प्रजातंत्र में देखा गया कि हर एक आदमी अपने को बिल्कुल ऐसा समझता है कि वो स्वयं ही उस प्रजातंत्र का संस्थापक है, संचालक है, और कर्त्ता है अब आप देख रहे हैं कि अमेरिका में कितना आतंक फैल रहा है किस कदर हिंसा का आलम है। अगर पढ़ते हैं तो आश्चर्य होता कि प्रजातंत्र का हाल ऐसा क्यों हो गया? ये तन्त्र सारा गड़बड़ क्यों? वही हाल बाद में आप साम्यवाद का देखेंगे। कहते हैं कि अब हम एक नया ऐसा संसार बसाऐंगे कि जिसमें सब मनुष्यों में समानता आ जाए, उनमें कोई भी फर्क न रहे। खाने पीने में हर चीज में एक जैसा हो जाए और उसके अलावा उसको कोई स्वतंत्रता न रहे। गर वो स्वतंत्र हो गया तो स्व के तन्त्र में वो गड़बड़ हो जाता है। इसलिए इसकी स्वतंत्रता हटा दी। मनुष्य को जब एकदम मूर्ख समझा जाए तभी ऐसा हो सकता है। पर मनुष्य मूर्ख नहीं है वो तो हर जगह उसको आप जितना दबाईयेगा उतना ही वो खोपड़ी पर चढ़ेगा। तो ये भी चीज कुछ बन नहीं पाई। वो भी नहीं बनी ये भी नहीं बनी। इस तरह जहाँ देखते है वही आतंक है। धर्म के मामले में तो आप देख रहे हैं। किसी धर्म की हालत देखकर तो लगता ही नहीं कि परमात्मा भी कोई चीज हो सकती है। जो एकमेव हो, जो केवल हो, उसके लिए सब लोग आपस में सर काट रहे हैं। सबको मार डाल रहे हैं। तो ये कारण क्या है? अब्राहिम लिंकन, मार्क्स साक्षात्कारी व्यक्ति थे। मानव हित के लिए उन्होंने कार्य किए। परहित की जगह सब का अहित हुआ। हीरे को तोड़ फोड़ के कीचड़ में डाल दिया गया। विज्ञान आया तो लोगों ने सोचा कि अब उनकी सारी समस्याएं हल हो गईं। पर विज्ञान को भी राक्षस बना दिया गया। एटम बम, हाइड्रोजन बम खोपड़ी पर खड़े कर दिए गए। नाइलोन बना दिया। दुनिया भर की बीमारियां आ गई, आफतें आ गई। मानव हित के लिए बनी चीजें विध्वंसक बन गईं।

इसका कारण क्या है? कारण यह है कि जैसे एक सन्त ने कहा हुआ है कि मनुष्य की जो धारणा है या मनुष्य का जो विचार है, मानव की जो चेतना है वह नीचे की ओर है और धीरे-धीरे वो गिर ही रही है। ये उन्होंने कहा नहीं। ये मैं कह रही हूँ क्योंकि आज वो बात साक्षात हो रही है। श्री कृष्ण ने जो धारणाएं रखी वो भी पूरी नहीं हुई, राम ने जो रखी वो भी पूरी नहीं हुई। उसके बाद सत्य स्वरूप थी, सत्य का ही अंग प्रत्यंग थी, वो सब पूरी नहीं हुई। इसका कारण यह है कि यह जब मनुष्य के दिमाग के घड़े में पड़ती है तो उसमें कोई ऐसी विषालु वस्तु है जो इसे विषाक्त कर देती है। यह विषालु वस्तु क्या है जिससे इस तरह का कारण होता है? वो है इसकी सीमाएं। हर चीज की सीमा होती है। इसी तरह बुद्धि की भी सीमा होती है और उसी में इस सीमा में, बंध कर घुट कर के और नष्ट हो जाती है। जैसे कि अंगूर के सुन्दर स्वाद वाले रस को भी गर घड़े में बंद कर दिया जाए तो उसमें शराब बन कर उसका नशा चढ़ जाता है। उसी प्रकार मनुष्य के मस्तिष्क में, जो कि सीमित है, उसमें असीम चीज डाल देने से एकदम नष्ट हो जाती हैं। इसका मतलब यह नहीं कि मनुष्य का मस्तिष्क ही कुछ खराब है। इसका मतलब यह है कि यह जो मस्तिष्क है इसकी सीमाएं बढ़ानी होंगी। मनुष्य की चेतना जो है वह व्यापक करनी होंगी। इतनी व्यापक होनी चाहिए कि इसके अन्दर सब कुछ समा जाए। और वह खुली रहे इसका लक्ष्य क्या है उधर तो हमारा ध्यान हटता जाता है जब चीज सीमित होती जाती है तो उसका लक्ष्य क्या है उधर हमारा ध्यान होता है। हर चीज का लक्ष्य था और मनुष्य का भी है। हित क्या चीज है श्री कृष्ण ने बताया कि हित वो है जिससे आत्मा का कल्याण हो। अब आत्मा स्वयं ही कल्याणमय है। कल्याणमय अर्थात आत्मा से हम लोगों का कल्याण। लेकिन जब आत्मा ही सोया हुआ है तो हमारा कल्याण कैसे हो?

आज का जो नवीन वर्ष है यह एक विशेष बात है क्योंकि आज की जो बात हम कर रहे हैं, आज का जो हम सहज योग का कार्य कर रहे हैं यह हम अपने मस्तिष्क को विस्तीर्ण कर रहे हैं, महान कर रहे हैं जैसे श्री कृष्ण ने कहा है कि विराट का स्थान जो है वो इस मस्तिष्क में है। इसके अन्दर उसकी जड़े हैं। उन जड़ों को हम जागृत करेंगे। वो जड़े जागृत होने से ही हम उस सत्य को पूरी तरह से शोषित कर सकेंगे आत्मसात कर सकेंगे। मनुष्य की जो सीमित प्रकृति है वह खुल जाती है। लैक्चर देना तो बहुत आसान है यह कहना आसान है कि आप मनुष्य के हित के लिए यह करो वह करो पर होता नहीं है। अन्त में मनुष्य अपना हित नहीं करता उल्टे अपना भी अहित कर सकता है और सारे समाज का भी अहित कर सकता है।

इस मस्तिष्क को बढ़ाने के लिए, सिर्फ एक ही तरीका है वह है कि हमारे अन्दर, हमारे हृदय में बसे हुऐ श्री आत्मा-राम को जागृत करना और उनके प्रकाश से हमारी बुद्धि को जागृत करना। हमारे मस्तिष्क को जागृत करना। सो कैसे होता है कि हमारे हृदय के अन्दर जो आत्मा है वो साक्षी स्वरूप बैठा हुआ है। कुण्डलिनी, जिसे आप गौरी माता कहते हैं, जब जागृत हो जाती है तो वो मस्तिष्क में यहाँ पर ब्रह्मरन्ध्र को छेदने के बाद परमात्मा का प्रकाश उसे आलौकिक करता है। परमात्मा का ही प्रतिबिम्ब हमारे हृदय में आत्मा के रूप में है। जैसे ही हमारी आत्मा जागृत हो जाती है तो इस आत्मा के चारों तरफ यह सात चक्रों का आलोक, सात चक्र के मंडल भी जागृत हो जाते हैं। इन सात चक्रों के जो पीठ हैं वह हमारे मस्तिष्क में है। ये भी जागृत हो जाते हैं। इसलिए यह सात मंडल भी हमारे हृदय में जागृत हो जाते हैं। यह मंडल जागृत हो जाने से ही हमारी जो नसें है हमारा जो मस्तिष्क है वो एक तरह से अति सूक्ष्म तरीके से खुल जाता है और उसके अन्दर शोषण करने की जो शक्ति है वह बढ़ जाती है। सत्य को शोषण करने की शक्ति बढ़ने से ही मनुष्य सत्य पर खड़ा हो सकता है। आज तक मनुष्य सत्य पर खड़ा नहीं हुआ है सत्य को सुनता है, जानता है, देखता है, पर उस पर खड़ा नहीं हो सकता है सत्य को आत्मसात करने के लिए, आत्मा की जागृति के लिए। वो आज सहजयोग में हो गई। सहज में ही हो गई कहना चाहिए। जो इतने लोग आत्मा को प्राप्त हुए हैं। आत्मा को प्राप्त होने से वो शक्ति जागृत होती है आपके अन्दर जिससे आप सत्य को आत्मसात कर सकते हैं। सत्य आपके अन्दर जागृत हो सकता है माने की दूसरा कौन है, दूसरा कौन है? सब तो हम ही हैं। हमारे ही अन्दर सब कुछ है। अब आपको सामूहिक चेतना आ गई है। तो उसमें साम्यवाद का भी सत्य आ गया। जब आप दूसरों को जान गए और अपने को भी तो आप अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त हो गए। तो आपमें गणतन्त्र का भी जो सत्य है वो जागृत हो जाएगा। स्वतंत्रता भी आ गई और एक तरह से पर का तन्त्र भी हाथ आ गया। दूसरों का जो तन्त्र है वो भी आपमें आ गया। और आपकी स्वतंत्रता भी आपमें आ गयी जिसे आप स्वतंत्र का तन्त्र

कहते हैं। शिवाजी कहते थे कि स्वं का धर्म जानो। स्व का माने अपनी आत्मा का धर्म आप जाने। और आत्मा का जो धर्म है कहने को तो स्व है लेकिन ये जगत, विश्व माने विश्व जो आत्मा है वो हमारे हृदय में बसा हुआ है। इसके जागते ही विश्व की भावना. जिसे हम एक तत्व ज्ञान के रूप में जानते थे, वो साक्षात हमारे अन्दर समा जाती है। हमें उसके लिए कोई किताब पढ़ने की जरूरत नहीं किसी को कोई जानने की जरूरत नहीं। यहाँ बैठे-२ आप सारी दुनिया को जान सकते हैं। इसमें कोई बड़े भारी आश्चर्य की बात नहीं है। कोई विशेष कार्य नहीं अगर आप मेरे लिए कहें तो मैं कहूंगी कि मैंने तो कुछ किया नहीं क्योंकि मैं तो जैसी हूँ वो तो मैं हूँ ही, वो तो अनादि काल से ही है। मेरी तो विशेष बात उसमें नहीं है। विशेषता आप लोगों की है जो कि आपने जाना माना और पाया। लेकिन सहजयोग का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर उसका अन्त नहीं होता। ज्ञान तो हो गया ज्ञान होने का माने आपके नाड़ी तन्त्र पर आपने जाना। जो लोग उल्टे तरीके से चलते हैं वो सोचते हैं कि ज्ञान करना माने ये कि हमें बुद्धि से जानना। बुद्धि से हमें जानना है बुद्धि से जानना माने क्या वो तो हम किताब पढ़ कर जान लेंगे या हम किसी गुरू के पास बैठकर जान लेंगे या किसी के उपदेश सुनने से हम जान लेंगे। ज्ञान का मतलब है कि आपके स्नायु तन्त्र में उसका ज्ञान हो। यही बोध है। यही बुद्ध है। आज आप बुद्ध हैं क्योंकि आपको बोध है।

ज्ञान तो अन्दर की जागृति से आता है। समग्र माने संघटित। जब तक आपके सारे चक्र संघटित नहीं होंगे तब तक समग्र ज्ञान कैसे होगा? पुस्तकें पढ़ने से थोड़े ही ज्ञान हो जाएगा। ज्ञान प्राप्त करने का मतलब होता है बोध! सो कैसे हुआ! किसी ने ये नहीं पूछा कि ज्ञान कैसे प्राप्त होगा! श्री कृष्ण ने भी साफ तरीके से नहीं कहा कि कुण्डलिनी का जागरण होना चाहिए। वो तो माँ ने ही बताना था। सबको बैठ कर गीता सुनाते हैं। अर्जुन एक साक्षात्कारी व्यक्ति थे। एक अर्जुन से बात करी उन्होंने बाकी सारी अन्धी दुनिया से नहीं। जब तक अन्धापन है, अन्धेपन का मतलब है कि बोध नहीं है आपकी नसों में, अभी तक वो सामूहिक चेतना का बोध नहीं है, जब तक ये नया आयाम आपके अन्दर जागृत नहीं हुआ तब तक सत्य सुनने की ही बात है। मनोरंजन मात्र है। तो बोध के बाद ही आपका चरित्र अपने आप बनता है। उसमें भी इन्होंने गड़बड़ करी चरित्र बनाओ, चरित्र बनाओ चरित्र बनाने मैं भी उनका भी चरित्र बनाओ किसी ने कहा पगड़ी बांधो किसी ने कहा काशाय वस्त्र पहनो, किसी ने कहा कि बोदी रखो। किसी ने इसाइयों से कहा वो इस तरह से हैट पहन कर घमो।पता नहीं क्या-क्या! अब वो सब कर रहे हैं। सारे कर्म कांड कर डाले और देखा कि नर्क की ओर फिर चले जा रहे हैं। धर्म को समझे बिना लोग कुरीतियों तथा दुर्व्यसनों में फंसते चले जा रहे हैं। कुण्डलिनी जागृत होने पर आपका चरित्र स्वतः बन जाएगा। कुण्डलिनी आपको सुधार लेगी। जब आप स्वयं सत्य पर खड़े हो जाएंगे तो आरम्भ में कभी कभी कुछ कठिनाई आ जाती है पर वह धीरे धीरे ठीक हो जाती है। कैसे हो जाता है वो मैं आपको नहीं बताऊंगी। लेकिन वो हो जाता है। क्योंकि बताने पर आप लोग घबरा जाएंगे। उसके तौर तरीके जो हैं बहुत नाजुक हैं। लेकिन हैं बड़े कठिन। जैसे कि हम लोग कभी नहीं सोचते हैं कि किस तरह फूल के साथ कांटे आ जाते हैं। किस तरह से पेड़ बनते हैं कैसे सुन्दर पत्तियों के आकार विकार बनते जाते हैं। ये हम कभी नहीं सोचते। जब होता है तब कहते हैं हाँ है। साक्षात्कार के बाद एक साहब मोटर में बैठे और लोगों के साथ सिगरेट पी रहे थे। सिगरेट पीते पीते उनकी मोटर में दुर्घटना हो गयी। किसी को कुछ नहीं हुआ। उनका कुछ नहीं हुआ। उनकी सिर्फ ये अंगुली जो विशुद्धि की थी थोड़ी सी कट गयी। और फिर तो समझ गए बात क्या है। इस प्रकार धीरे-२ सब कुछ ठीक हो जाता है कि ये हमारा चरित्र जो है जरा इधर उधर जा रहा है, मोटर जो है वो जरा से सीधे रास्ते पर ही है, वो थोड़ी बहुत इधर उधर फिसल रही है। फिर आप ठीक कर लेते हैं। करते-करते ऐसी दिशा में आ जाते हैं कि आप दोनों ही चीजों, गति और रोक दोनों के माहिर हो जाते हैं। वो मास्टरी जब आ गई तब समझ लेना चाहिए कि आप चालक हो गए। मास्टर होने के लिए आपको निर्विकल्प में उतरना होगा। और जब आप निर्विकल्प में उतर जाते हैं तब आप गुरू महाराज हैं। मैं आप सबको खुद नमस्कार करती हूँ। तब आप लोग गुरू हो जाएंगे, और फिर जब हम गुरूत्व को पा जाते हैं तब फिर हम जानते हैं सबका कि हाँ-हाँ हम भी ऐसे ही थे जिनको हम जानते हैं। हाँ हाँ ऐसे ही हमारा था ऐसा ही था। यही मामला था। हम सब जानते हैं। सब चीज बहुत आसान हो जाती है। तब आप गुरू हो जाते हैं और इसको कहना चाहिए कि सहज का और सहज में ज्ञान को प्राप्त होना। ये चीज जब तक नहीं आती है तब तक मनुष्य में सब चीज बेकार है।

लेकिन जब आप गुरू हो जाते हैं तब आपको पता होता है

कि अभी हममें कमियाँ है और तब आपको कोई न कोई तपस्चर्या करनी पड़ती है और वो तपस्चर्या का मतलब ये नहीं कि आप उसमें भूखे मरे, ये तो माँ कभी नहीं चाहेगी, क्योंकि माँ को दुख देना है तो आप भूखे रहिए, भूखे रहने कि कोई जरूरत नहीं। भूखे रहना कोई जरूरी नहीं है। अगर आपको नहीं खाना तो नहीं खाइए। पर **परमात्मा के नाम पर केवल एक ही तप करना चाहिए माने ये कि आपको अपनी स्थिति निर्विचारमय बनानीं चाहिए। ध्यान धारणा करके आपको अपनी सफाई करके अपनी स्थिति आपको निर्विचारमय बनानी चाहिए।** निर्विचार में जब आप आ जाते हैं तभी आपका ये जो पौधा है, वह बढ़ता है। इसलिए बहुत से लोग कहते हैं माँ हमसे ध्यान नहीं होता तो भैया आधे ही रह जाओगे। ध्यान रोज करना होगा जब तक ये तपस्या नहीं की जाएगी, तब तक आप पूरी तरह से प्रकाशमय नहीं होएंगे। जब तक आप ध्यान नहीं करेंगे तब तक आप हमें भी नहीं समझेंगे। तब तक आप बिल्कुल हमें नहीं समझेंगे क्योंकि जब तक आप में त्रुटियाँ रहेंगी तब तक आप उन त्रुटियों के झरोखे से देखेंगे। जैसे कि अगर कोई नीले रंग का आप अपने आंख पर परदा डाल लें तो हम आपको नीले ही दिखाई देंगे, पीला डालेंगे तो पीले ही दिखाई देंगे। और इसी तरह अगर एक भी त्रुटि आपके अन्दर रहेगी तो इसी तरह हम आपको नजर आएंगे। हम आपको असलियत में नजर आएंगे ही नहीं। ये एक हमारा तरीका है तो इन सब चीजों को आपको इस नवीन वर्ष में सोचना है कि अब हमारे पास ज्ञान प्राप्त हो गया है। हमें अब इसे अपना चरित्र बनाना है। और चरित्र बनाने के लिए हमें जो तप और ध्यान करना है वो हमें करना है किसी भी हालत में। लोग कहेंगे कि माँ हमारे पास समय नहीं है, लेकिन ये बात नहीं। लन्दन जैसे शहर में जहाँ इतनी ठंड रहती है लोग चार बजे उठ कर नहा कर ध्यान करते हैं। लेकिन हिन्दुस्तान में लोग कहते हैं अच्छा अगले साल करेंगे, अगले साल करेंगे। और जैसे-जैसे हम उत्तर की ओर बढ़ते हैं लोग सोचते हैं क्या जरूरत है हम तो कैलाश की तरफ बैठे हुए हैं, हमको क्या जरूरत है दक्षिण वाले करते रहें मेहनत, हम तो उत्तर में बैठे हैं। उत्तर प्रादेशिक क्षेत्र जो है तो जितने भी लोग उत्तर में बैठे हुए हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि हाँलाकि कैलाश उत्तर में है लेकिन दृष्टि शिव की दक्षिण में है। इसलिए उनको दक्षिण-मूर्ति कहते हैं। इसलिए चाहिए कि आप लोग भी अपनी ओर उनकी दृष्टि लाएं। उनकी दृष्टि आप के ओर लाने के लिए, थोड़ी सी योग्यता होनी चाहिए और उस योग्यता में शुद्धि भी। यही गौरी स्वरूपा कुण्डलिनी, आपके अन्दर जो शुद्ध इच्छा है, उसको आपको जागृत करना है। अनुशासन जिसके बारे में हमें सतर्क होना है।

दुनिया भर के कायदे कानून हमें आते हैं। पर अन्दर का अनुशासन हममें अभी नहीं आया। देश और संस्कृति के व्यर्थ के अहंकार की भावनाओं से मनुष्य का जो अनुशासन है वो चला जाता है। वो बहुत जरूरी है हमारे अन्दर। और दूसरी चीज यहाँ राजकीय आन्दोलन की वजह से भी हममें अनुशासनहीनता आ गई है। ये सारी चीजें व्यर्थ हैं।

मैंने बताया था कि हमें भाई-बहन का रिश्ता तो समझ में आता है लेकिन भाई चारा का नहीं। भाई चारा का रिश्ता समझना है। बहन चारा और भाई चारा। लोग कहते हैं कि दो औरतें कहीं रहे, चाहे वो बहनें हों, रह नहीं सकती लेकिन मैं तो मर्दों को देखती हूँ वो भी कुछ कम नहीं हैं। अब इनकी लड़ाइयाँ और तरह की होती हैं औरतों की दूसरी तरह की। आदमियों की लड़ाइयाँ जब शुरू होती हैं तो कुछ समझ में ही नहीं आता है कि इसका स्वरूप कहाँ से पैदा हुआ है। आदमी आदमी का विरोध करता है और औरत औरत का। दोनों पशोपेश में हैं मेरे लिए। तो मैं ये सोचती हूँ अरे भई हम बात कर रहे हैं आसमान की और आप पाताल की। हम कह रहे हैं कि क्या-क्या आपको सितारे बना कर आकाश में चमकाएं और आप लोग मिट्टी के बराबर भी बात नहीं समझते। मैं तो अवाक रह जाती हूँ जब मैं ये बातें सुनती हूँ मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। **सबसे पहली बात है माँ को खुश करने के लिए कि आपस में आप भाई चारे से और बहन चारे से रहें।** अगर आपको वाकई आनंद लेना है तो वो है भाई चारे से। और अब सहज योग का भाई चारा कैसे चलता है वो इस प्रकार कोई आया आप के पास,तेरे तो भूत लग गया तू जा। वो मेरे पास आया माँ मेरे भूत चिपट गया। मैं कहती हूँ तुमको किसने बताया? वो गया था न उन्होंने बताया कि तेरे भूत लग गया है। माँ मेरा भूत छुड़ाओ। मैंने कहा तुम उन्हीं को कह दो तेरे भूत लग गया। तेरे कहीं भूत वूत नहीं लगा। काहे को मेरे पीछे पड़ा है? नहीं उसने बताया तेरे पीछे भूत लगा है। दूसरा आएगा तो कहेगा कि माँ जो कोई देखता है वो यही कहता है तेरा ये चक्र पकड़ रहा है। माँ मेरा ये चक्र पकड़ रहा है? अरे मैंने कहा भई कि तुम जागृति पाओ, ध्यान करो सब ठीक हो जाएगा। तो कहने का मतलब यह है कि आप लोग अपने

को इतने शक्तिशाली बनाइए कि भूत बाहर भागते फिरे। आपने देखा की एक सहज योगी आया तो सारे भूत दिल्ली से भाग खड़े हुए। हजारों की तादाद में भाग जाएंगे लेकिन आप भी शक्तिशाली होइये।आप तो भूतों से डरते हैं तो और आप की खोपड़ी में बैठेंगे नहीं तो क्या होगा। एक भूत वाला आदमी आ गया तो सारे के सारे भाग खड़े हुए। सो ये भाई चारे की बात है हमारे अन्दर संघ है। इसलिए बुद्ध ने कहा है संघम्, शरणम् गच्छामि। संघ की शक्ति हमारे अन्दर है। हम सब जैसे भी हैं वो सब मिलकर हैं। अगर हम अपनी संघ शक्ति को बढ़ा लें तो कोई भूत यहां आएगा ही नहीं। वह तो पहले ही भाग जाएगा। एक नहीं हजारों कारवां के कारवां यहां से भाग खड़े होंगे। लेकिन हमारी संघ शक्ति नहीं है। इसलिए हम कमजोर हैं। हम यह नहीं सोचते कि सहज योग बढ़ रहा है, इसमें योगदान दें। एक दूसरे की शिकायतें ही करते रहते हैं। अपनी जो संघ शक्ति है वो बनाएं। अन्दर जो भी डर है उसको निकालिए डर को आप को एक तरफ में कर देना है और आपको भूत से या किसी से डरने की कौन सी बात है। बहुत सा हमारा झगड़ा खत्म हो जाए अगर हम किसी से न डरे तो। आपस का झगड़ा अगर खत्म हो जाए, अगर हम इस आदमी से नहीं डरेंगे। हमें ये डर लगा रहता है कि हमारी पदवी खराब हो जाएगी। यहाँ कोई राजनीति तो है नहीं कि आज कोई प्रधान मन्त्री बनने वाला है कोई उप-प्रधान मन्त्री बनने वाला है। जो सब कोई अपनी अपनी कुर्सी संभाले बैठे हुए हैं? यहाँ तो सबकी कुर्सी जमाने का काम है। किसी को आसन दिया है। आपका आसन जमाने का कार्य होना चाहिए। तो भाई चारे से क्यों न सब करें। पिछली मर्तबा मैं सबसे मजाक कर रही थी। मैंने कहा था कि आप किसको भाई बना रहे हैं बताओ। अब छोड़ो। बहनें तो बहुत बन गई अब भाई बना लो। और बहनों को चाहिए। कि अपनी सहेलियां बनाओ। पहले बड़ी सहेली का बड़ा महत्व होता था। आजकल सहेली शब्द तो रह ही नहीं गया। औरतों में बन पाना असंभव बात है। दो औरतें अगर मिलें तो मेरा तो कल्याण हो जाए। मुश्किल ये होती है कि न जाने कहाँ से इनको सब खराब बातें मिल जाती हैं। अच्छी बात कुछ नहीं मिलती। एक दूसरे से डरती हैं। हर समय परेशान रहती हैं। यह सब आप छोड़ दीजिए। एक दूसरे पर भरोसा करना सहज योग का नियम है। अब देखिये कि इतना रूपया इकट्ठा होता है सहज योग में। हम लोग भी बहुत सा रूपया देते हैं। और उसका एकाउंट होता है। आपको आश्चर्य होगा कि मैंने कभी भी ट्रस्ट का हिसाब नहीं देखा। आज तक मुझे ये भी नहीं मालूम कि कितना पैसा है। बहरहाल हमारे भाई साहब आजकल चार्टड एकाउंटेंट हैं। ये तो मैं उनसे कहती थी कि तुम देख लो। वो आ कर मुझे कहते हैं अरे क्या कर रहे हो। इतने कंजूस लोग हैं कि एक भी पैसा नहीं खर्च करते और तुम्हारे सहज योगी इतने कंजूस क्यों हैं? इनके ऊपर आय कर आ जाएगा।

सो सहज योगी कहते हैं कि खर्चा कहां करें कोई बन ही नहीं रहा खर्चे का तो। मैंने कहा कोई इन्तजाम करो कोई खर्चा करो कि सब ठीक हो जाए। लोग मुझे कहते थे कि देखिए माँ आपको देखना चाहिए था। मैंने कहा मुझे हिसाब किताब आता ही नहीं जो हो रहा है होने दो। फिर भी एक पैसा इधर से उधर नहीं हुआ। कोई गड़बड़ नहीं हुई। ये माँ का भरोसा है। माँ का विश्वास है उसी तरह आप एक दूसरे पर विश्वास करो। एक दूसरे की गलतियों को बढ़ा चढ़ा कर मत बताइऐ। दूसरे आप अच्छाइयां बताइये। ये सोचिए कि उस औरत में कौन से ऐसे गुण हैं। इसका मतलब यह नहीं कि आप अपने को दोष दीजिए। बहुत से लोगों कि यह भी आदत है कि मैं ही खराब हूँ। बिल्कुल नहीं। आप तो बहुत ही बढ़िया हैं। पहली चीज यह है कि आप अपना दोष मत देखिए लेकिन यह देखिये कि मैं जिसकी बुराई कर रहा हूँ उसके अच्छे गुण क्या है। इससे आप अच्छे हो जाएंगे। लेकिन अगर आप दूसरों के दोष देखते रहेंगे तो सारे दोष आपके अन्दर आ जाएंगे। इसलिए दूसरों के दोष ठीक करने हैं। दूसरों से प्यार करने में, दूसरों से वार्तालाप करने में, एक मधुरता लेकर के एक प्रेम की भावना लेकर अगर आप करे तो सहज योग बहुत आसानी से फैलेगा। बहुत आसानी से आगे आएगा। और सारे संसार में फैलेगा। सारी दारोमदार मेरी आप पर है।

तो आज नवीन वर्ष के शुभ अवसर पर भाई चारे का व्रत हमने लेना है। सबके लिए जीने का तरीका यदि आ गया तभी मनुष्य विशाल हो जाता है और ये विशालता आप प्राप्त कर सकते हैं सहज योग से। और आज इस नवीन दिवस पर ये विशेषता का एक संदेश अपने हृदय में रखना चाहिए कि आज से बस हम विशाल हैं और ये विशालता हमारे हृदय में बसे और इसमें हम सारे विश्व को देखें। हम सब भाई बहन एक माँ के बेटे हैं। एक सूत्र में बँधे हुए हैं अत्यन्त सुन्दरता से जुड़े हुए, प्यारे-प्यारे सब फूल हैं। जब हम अपने प्रति ऐसी सुन्दर भावना कर लेंगे। और दूसरों के प्रति भी, तभी जाकर के एक सुन्दर सा हार तैयार होगा।

हमारा अनन्त आशीर्वाद है कि आप सब लोग इस विशेष रूप को प्राप्त करेंगे।

महाकाली पूजा परमपूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन पेरिस 11.7.1993 (सारांश)

आज हमने देवी की पूजा करने का निर्णय किया है। इस बार हम आदिशक्ति, कुण्डलिनी, सरस्वती या महालक्ष्मी के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम महाकाली की बात कर रहे हैं। यह देवी सर्वप्रथम आकर गौरी रूप में श्री गणेश की स्थापना करती हैं। वे महासरस्वती और महालक्ष्मी पूर्ण रूप हैं। उन्हीं में से ही यह शक्तियां प्रवाहित होती हैं। अतः वे ही परमात्मा की इच्छा की शक्ति हैं और हमारे अन्दर भी इच्छाओं का सृजन करती हैं। हमारे अन्दर की यह इच्छाएं बाहर प्रसारित होने लगती हैं और सभी इच्छाओं के प्रति एक प्रतिक्रिया हममें विकसित होती हैं।

स्वयं को भोजन देना सर्वप्रथम सर्वोपरि और सर्व पुरातन इच्छा है जो हमें इस देवी से प्राप्त होती है। जीवित रहने के लिए पर्याप्त भोजन करना अत्यन्त आवश्यक है। हमनें यह भी देखा है कि जब इस प्रकार की इच्छा असमान्य रूप से बढ़ जाती है तो व्यक्ति इसका दास हो जाता है तथा जितना भी वो खा ले, उसकी तृप्ति नहीं होती। परन्तु अहं के माध्यम से कार्य शुरू करके यह व्यक्ति की खाना बनाने वालों की तथा उपलब्ध कराने वालों की सन्तुष्टि करती है। अब इच्छाओं की पूर्ति किस प्रकार करें। किसी तरह से वह भोजन लाते हैं, उसका प्रदर्शन करते हैं, आपके सामने रखते हैं ताकि आप इसे स्वीकृति दें, और तब वे इस भोजन को परोसते हैं। वे आपको बेवकूफ बनाना जानते हैं और आपको भी इसमें प्रसन्नता मिलती है। अतः आपकी इस इच्छा को आपका अहम् प्रचालित करता है। जब यह इच्छा सामूहिक बन जाती है और सामूहिक अहम् की अभिव्यक्ति बन जाती है तब आप सभ्य प्रकार के पेटू बन जाते हैं। परन्तु यदि आपमें अहम् न हो। तो लोग दूसरे लोगों को खिलाना पसंद करना चाहेंगे। यह इच्छा प्रतिक्रिया करती है तब महाकाली की कृपा से एक नई इच्छा जागृत होती है, तब दूसरों को भोजन खाते हुए देखकर आपको अच्छा लगता है। आप द्वारा बनाया गया, परोसा गया व दिया गया भोजन जब लोग करते हैं तो उसमें आपको आनन्द आता है। आप केवल देखना चाहते हैं। और इससे आपको संतोष प्राप्त होता है। परन्तु जितना मर्जी खाना खिला लें आपको पूर्ण संतोष न मिल पाएगा। आज के पाश्चात्य जीवन में बच्चे से यह पूछना आवश्यक हो गया है कि आप क्या खाएंगे? पुराने समय में पूरे परिवार के लिए खाना बनता था पर आज बच्चे से पूछा जाता है कि आप क्या खाएंगे और बच्चा अपनी पसंद बताता है। मान लो वह चीज आपके फ्रिज में नहीं है तो हो गयी आपकी छुट्टी। अहम् में फंसे उस बच्चे को आप किस प्रकार खुश करेंगे। इस तरह शनैः शनैः हम अपने बच्चों के अहम् को बढ़ाते हैं। हमें यह कहना चाहिए, "यह खाना बना है, बहुत अच्छा है, आप इसे खाएँ। माता-पिता को पसंद पूछकर बच्चों के अहम् को बढ़ने नहीं देना चाहिए। आपको समझ होनी चाहिए कि बच्चों की क्या आवश्यकता है।

इस मामले में देवी का आशीर्वाद यह है कि वह आपको दूसरों को खिलाने की इच्छा प्रदान करती है तब आप भूख से पीड़ित लोगों की चिन्ता करने लगते हैं और उनकी पीड़ा का कारण जानना चाहते हैं। यह इच्छा इतनी अति तक पहुंच जाती है कि कुछ लोग सोचने लगते हैं कि उन्हें खुद कुछ नहीं खाना चाहिए। एक मूर्खतापूर्ण त्याग भाव आ जाता है। व्यक्ति ने जो भी खाना है खाए। इस प्रकार के त्याग में कोई बड़ी समझदारी नहीं है। इस प्रकार का त्याग जब लोग करने लग जाते हैं उन पर कई प्रकार के कष्ट आ जाते हैं। और वे अत्यन्त त्यागी और क्रोधी बन जाते हैं। अतः भूखा व्यक्ति भी उतना ह बुरा होता है जितना आवश्यकता से अधिक खाने वाला। मैं सोचती हूं भूखा रहने वाला व्यक्ति अधिक खराब होता है।

यह इच्छा आपको अच्छा व्यक्ति बनाने के लिए आती है। आप जानते हैं कि अच्छाई को सब पसंद करते हैं इसलिए लोग दूसरों के प्रति अच्छा बनने का प्रयत्न करते हैं। दूसरों को पसंद करने से वे सोचते हैं, कि लोग उन्हें बहुत पसंद करेंगे। परन्तु यह इच्छा इतनी अधिक बढ़ जाती है कि आप हर समय ही दूसरों को प्रसन्न करने के प्रयास में लगे रहते हैं और एक प्रकार से इसके दास बन जाते हैं। आप में इतनी बनावट आ जाती है कि लोग समझ जाते हैं कि इस व्यक्ति में कुछ भी स्वाभाविक नहीं है। वह मात्र हमें खुश करने का प्रयत्न कर रहा है। किसी दूसरे व्यक्ति को यदि आप साक्षी भाव से और पूर्ण निस्वार्थ होकर प्रसन्न करें तो ये स्वाभाविक और अच्छी बात है परन्तु किसी से लाभ उठाने के लिए यदि आप उस व्यक्ति को प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हैं तो यह निम्न कोटी का पाखंड है जिसमें आप स्वयं फंस जाते हैं। लोग आपका मजाक करते हैं, आप पर हंसते हैं, आपसे प्रसन्न नहीं होते। वे जानते हैं कि आप पाखंडी हैं और किसी अनुचित लाभ के लिए यह सब कर रहे हैं। अच्छा या भला बनने के लिए नहीं कर रहे हैं। अच्छा व्यक्ति स्वतः ही दूसरों को प्रसन्न करता है, प्रसन्न करने का प्रयत्न नहीं करता। वह प्रकृति से, स्वभाव से ही ऐसा होता है कि वह लोगों को प्रसन्न करता है। अब देवी क्या

कार्य करती है? वे लोगों के सम्मुख सत्य को प्रकट करती हैं। वे दर्शाती हैं कि किसी स्वार्थ प्राप्ति के लिए किया गया, आपका प्रयत्न सफल नहीं होता। एक हद तक इसमें सफलता मिलती है और तब देवी उनका भण्डा फोड़ कर देती है। भंडा फोड़ जब होने लगता है तो वे आश्चर्यचकित रह जाते हैं, "मेरा भंडा फोड़ कैसे हो गया? मैं कैसे पकड़ा गया? लोग कैसे जान गये? यह महाकाली कि शक्ति का कार्य है। वे सारी बुराई, असत्य और झूठ का पर्दाफाश करते हैं।

तीसरी इच्छा जो लोगों में है वह भौतिक वस्तुओं को प्राप्त करने की है। और इसी से भौतिकवाद का जन्म होता है। परन्तु यह अन्तहीन है क्योंकि एक वस्तु को प्राप्त करके व्यक्ति को सन्तोष नहीं होता और जो भी चीज उसे मिलती है उसका वह आनन्द नहीं ले पाता। यह भी मानवीय असफलता है जो कि अर्थशास्त्र को जन्म देती है। अर्थशास्त्र कि सृष्टि इसलिए होती है क्योंकि आवश्यकताएं प्रायः कभी पूर्ण नहीं होती। अतः हम एक चीज से दूसरी की ओर बढ़ते चले जाते हैं और अन्ततः उद्यमियों के दास बन जाते हैं। इतना अधिक दासत्व आ जाता है कि व्यक्ति अपना व्यक्तित्व खो बैठता है। विवेकहीनता के कारण लोग ऐसा करते हैं। परन्तु सहजयोगियों के लिए महाकाली शक्ति कार्य करती है और उन्हें शिक्षा देती है, 'ठीक है, यह वस्त्र आपको अच्छे लगते हैं, यह ले लें, और यही आपके लिए सर्वोत्तम है। एक ही बार में आपके पूरे जीवन की समस्या हल हो जाती है। यह इच्छा सर्वसाधारण में बाह्य वस्तुएं जैसे वस्त्र, बालों का स्टाइल तथा अन्य मूर्खतापूर्ण प्रदर्शनों से दूसरों को प्रभावित करने के लिए आती हैं। जब हम अहं का उपयोग करने लगते हैं तब इस प्रकार कि मूर्खता हमारे मस्तिष्क में आ जाती है। अहम् व्यक्ति को पूर्णतया मूर्ख बना देता है। ठीक काम करने के लिए लोगों को समझाना बहुत कठिन कार्य है परन्तु गलत चीजें वे तुरन्त पकड़ लेते हैं। उदाहरणतया मैंने लोगों से कहा कि सिर में तेल डाला करें। यदि प्रतिदिन भी नहीं लगाते तो कम से कम नहाने से पहले खूब तेल मालिश करके सिर को धो लें। अब मैं देखती हूँ बहुत से लोग गंजे हो रहे हैं फिर भी तेल नहीं लगाते। इसके बारे मैं क्या करूं? इतनी साधारण चीज पर भी उन्हें विश्वास नहीं होता – कि आपको पौष्टिक तत्व चाहिए। वे मूर्खतापूर्ण कार्य करेंगे, यह भी नहीं सोचेंगे कि किस चीज से उन्हें हानि पहुंचती है। यहां महाकाली क्या करती है? वे आपको दण्डित करती है। आपके शरीर को दण्डित करती है। आप यदि बहुत तंग कपड़े पहनते हैं तो आपकी टांगों पर कोई समस्या आ सकती है। यदि आप छिद्रिल (छेदों वाली) पेन्टें पहनते हैं तो आपको जकड़न हो जाती है। कोई भी आसाधारण कार्य यदि आप करेंगे तो आपको उसका दण्ड भुगतना होगा। पहले तो इसे करने के लिए आपको धन खर्च करना पड़ेगा और फिर शारीरिक रूप से आप दण्डित होंगे।

साधारण जीवन अपना लेने से बहुत सारी चीजों को त्यागा जा सकता है। और हमारा महाकाली तत्व हमें अधिकाधिक ऊँचा उठाता है। इसके बावजूद भी हम नीचे आ जाते हैं। तब यह महाकाली आगे आकर हमें दर्शाती है कि हमने कौन सी गलती की, किस प्रकार हम भटक गये और किस प्रकार तत्व की बात को छोड़ दिया। एक अन्य बहुत सुन्दर कार्य जो वह करती है वह है एक भ्रम की सृष्टि करके आपके विवेक और संवेदनशीलता की परीक्षा लेना। भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। आपके मस्तिष्क में वे भ्रान्ति पैदा कर देती हैं और आप, दूसरे लोग या स्थिति भ्रान्तिपूर्ण हो जाती है और आप इसमें फंस जाते हैं। तब आपको समझ आता है कि मैंने यह गलती की है। भ्रान्ति पैदा करके यह महाकाली शक्ति हमारे अहम् को ठीक करती है। यह मरीचिका (मृगतृष्णा) या माया ही हमारे भ्रमों के पीछे भागने के लिए जिम्मेदार है। यदि हम अन्दर से सन्तुष्ट हैं तो हम माया के पीछे नहीं दौड़ते। इस भ्रम की सृष्टि यदि न की जाए तो पूरा विश्व इतना अहम् वादी हो जाएगा कि यह समाप्त हो जाएगा। तो भ्रम की रचना करना हमारे अन्तःस्थित महाकाली शक्ति का महान कार्य है। बहुत से लोग माया की बात करते हैं। यह श्रीमाता जी की माया है। यह माया है वह माया है। यह महाकाली का कार्य है। वे आपकी परीक्षा लेना चाहती है। परन्तु सहज योग में यह परीक्षा अधिक कठिन नहीं होती। तो सहजयोगियों की परीक्षा लेने के लिए यह महाकाली सहायता करती है। इस प्रकार भ्रम आपको सुधारते हैं। भ्रम यदि न हो तो सीधे से आप सुधरेंगे नहीं। यदि मैं कहूं, "ऐसा न करें तो शायद आपको यह बात अच्छी न लगे। निसन्देह आपको मेरी बातें अच्छी लगती हैं पर कभी-कभी ऐसा नहीं होता। और तब भ्रम कार्य करता है और आप समझ जाते हैं कि "मैं कहाँ था, और अब कहाँ हूँ? मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था..... मैं इस समस्या में कैसे फंस गया? कैसे मैं इतना मूर्ख बन गया? यह कार्य वे करती हैं।

वे ही हमें पूर्ण आराम प्रदान करती है। जब आप थके हुए और परेशान होते है, आपकी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ और क्या न करूँ तब वो आपको नींद में सुला देती हैं। आप पूरा दिन कार्य करते हैं, अन्त में महाकाली की शक्ति आप पर कार्य करती है और एक बालक की तरह से आपको निद्रा-मग्न कर देती हैं। उस समय अपने तथा दूसरों के साथ जो भी बुराइयां हमने की सब क्षमा कर दी जाती हैं। उनकी गोद में हम शान्ति से अच्छी तरह सोते है, और हमारी सारी समस्याएं हल हो जाती है। जब आप स्वपन ले रहे होते हैं तो वे आपको समस्याओं के समाधान सुझाती हैं। बहुत से लोगों ने मुझे बताया कि, 'श्री माता जी आप मेरे स्वप्न में आयीं और मुझे फलां दवाई लेने के लिए कहा। आप मेरे स्वप्न में आयीं और मुझे बताया कि तुम्हारे लिए एक विशेष प्रकार का जीवन हितकर होगा।' वे मुझे आते हुए स्पष्ट देखते

है। परन्तु वह मेरा पूर्ण रूप नहीं होता... केवल महाकाली की शक्ति कार्य कर रही होती है। आप बहुत गहन निद्रा की स्थिति में होते है जिसे सुषुप्ति अवस्था कहते हैं। इस अवस्था में वे दिखाई देती हैं और स्वप्नों में वे आपका मार्ग दर्शन करती हैं।

परन्तु सबसे महान कार्य जो वे करती है वह है आपको पावित्र्य एवं सुरक्षा का विवेक प्रदान करना। बच्चों में जन्म से ही पावित्र्य लज्जा, शालीनता और भद्राचरण का विवेक होता है। परन्तु शनैः शनैः जब वे दूसरे लोगों को अभद्रतापूर्ण व्यवहार करते देखते है तो वे भी उसी रास्ते पर चलने लगते हैं। शालीनता उनके लिए एक बन्धन बन जाती है। परन्तु स्वाभाविक रूप से यह बताने के लिए कि यह कार्य अभद्र है और आपको नहीं करना चाहिए महाकाली शक्ति विद्यमान हैं। ज्यों-ज्यों आपकी आयु बढ़ती है और आप परिपक्व होते है, आप अपनी पवित्रता का अपमान करने लगते है और अपरिपक्व मूर्ख लोगों की तरह बनने लगते है। यह सारी बातें यदि ध्यान धारणा के माध्यम से समझी जाएं तो हम जानते है कि महाकाली शक्ति हमारी बहुत अधिक मदद करती है क्योंकि वे ही कुण्डलिनी के उत्थान के लिए उचित मार्ग बनाती हैं। महाकाली कुण्डलिनी के समान ही हैं क्योंकि कुण्डलिनी महाकाली शक्ति की अवशिष्ट शक्ति है। वे विद्या से परिपूर्ण हैं। परन्तु उनका कार्य भिन्न है। महाकाली का कार्य आपकी रक्षा करना, मार्ग दर्शन करना तथा विवेक प्रदान करना है। और कुण्डलिनी का कार्य आपको शुद्ध करना, बाधाओं को दूर करना, आपके साथ खिलवाड़ न करना, आपको क्षमा करना और ठीक प्रकार से उत्थान के लिए आपकी सहायता करना है।

एक सहजयोगी होने के नाते अपने जीवन में आप देखेंगे कि महाकाली शक्ति कैसे हर तरह से आपकी सहायता करती है। उन्हें कार्य करते हुए देखना बहुत ही अच्छा लगता है – किस प्रकार वे आपके लिए सब प्रकार का सन्तोष लाती हैं। लोभ, लालच और गुस्सा चला जाता है। सबसे अधिक सहायता पूर्ण कार्य जो वे करती है वह यह है कि महाकाली शक्ति के प्रकाश में स्वतः ही आपकी सारी बुरी आदतें भाग जाती है। आप नहीं चाहते कि कोई विध्वंसक कार्य हो। काई विध्वंसक कार्य यदि आप पहले कर भी रहे होते हैं तो आप उससे छुटकारा पाने का प्रयास करते है। आपके अन्दर जागृत हुई महाकाली शक्ति ही यह कार्य करती है। उसी ने आपको इतना सुन्दर और देव तुल्य बना दिया है। अपने सुधारों तथा भ्रान्ति द्वारा उसने आपको ऐसा बना दिया है। अतः पतन के लिए जिम्मेदार चीजो जैसे धन, लालच और कामुकता आदि से लिप्त न हो। बच्चे, पति और पदार्थो के स्वामित्व भाव से भी लिप्त न हों। समझ लें कि बांटने में ही आनन्द है। आप सभी कुछ दूसरों के साथ बांटना चाहते है और ये बांटने की भावना तभी शुरू होती है जब ये महाकाली की शक्तियाँ आपको आनन्द, सामूहिक अस्तित्व, पावित्र्य और बांटने के आनन्द का आर्शीवाद प्रदान करने लगती है। ये सारे आर्शीवाद आपको महाकाली शक्ति से ही प्राप्त होते है। आज हम उसी महाकाली शक्ति की पूजा करने वाले हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री कृष्ण पूजा वार्ता

परम पूज्यमाता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)
हथनीकुण्ड (हरियाणा) 11-12-1993

आज हम श्री कृष्ण की पूजा करेगें। श्री कृष्ण के जीवन में यमुना नदी की महान भूमिका रही है। यमुना नदी बहुत गहरी नहीं है और इसके जल का रंग भी श्री कृष्ण के रंग की तरह से नीला है। यमुना की अपेक्षा गंगा नदी बहुत तेज गति से चलती है तथा उसकी गहराई भी बहुत अधिक है। हो सकता है अगामी वर्ष हम लोग अलाहाबाद जाएँ और इन दोनों नदियों का संगम देख सकें। पूरा हरियाणा राज्य ऐतिहासिक स्थान है और इसका पौराणिक महत्व भी है। आप सब जानते है कि यहां पर कुरूक्षेत्र में पांडवो और कौरवो ने युद्ध किया। ध्यान धारणा के लिए भी इस क्षेत्र का उपयोग हुआ। मार्कण्डेय, जिसका नाम आपने प्रायः सुना है, ने यहां तपस्या की। वे पहले महाराष्ट्र में थे, जहां आपने सप्तश्रंगी देखी है परन्तु बाद में तपस्या करने के लिए वे यहां आ गये और यहीं अपने ग्रंन्थ की रचना की। स्थान-स्थान पर आपको पीर तथा आत्मसाक्षात्कारी लोगों की जगह मिलेगी। इनका आज तक सम्मान होता है। श्रीकृष्ण के यहां रहने के कारण यह क्षेत्र अत्याधिक अध्यात्मिकता का है। उन दिनों में न तो कारे होती थी न ही यातायात के अन्य साधन। अतः पैदल चलकर श्री कृष्ण ने इस क्षेत्र को बहुत अच्छी तरह से चैतन्यित किया। यमुना नदी के तट पर खेलना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। निःसन्देह उनका बचपन यहां नहीं बीता परन्तु राजा बनने के पश्चात् वे प्रायः इस स्थान पर आया करते थे। एक विशेष प्रकार से हमें उनका चरित्र समझना होगा।

सर्वप्रथम हमारे सम्मुख श्री राम का अवतरण है। श्री विष्णु ने श्री राम के रूप में अवतरण लिया परन्तु अपना देवत्व वे भूल गये। एक साधारण मानव की तरह से उन्होंने जीवन यापन किया और सुकरान्त वर्णित हितकारी राजा बने। उन्हें अपनी पत्नी को त्यागना पड़ा जो कि अत्यन्त प्रतिकात्मक है। उत्तरी भारत के अन्य क्षेत्र में भी उनके द्वारा चैतन्यित किये हुए क्षेत्र हमें मिलते हैं। परन्तु महाराष्ट्र में, जहां वे मीलों-मील नंगे पांव चले, उन्होंने पूरी पृथ्वी को ही, चैतन्यित कर दिया। यह पृथ्वी बहुत से सन्तों और अवतरणों द्वारा चैतन्यित की गयी। श्री राम के पश्चात् क्योंकि धर्म ने एक गम्भीर मोड़ ले लिया था और एक अत्यन्त त्याग पूर्ण धार्मिक वातावरण की रचना हो गयी थी। अतः श्री कृष्ण ने एक हल्के-फुल्के वातावरण की सृष्टि करनी चाही। वे एक शिशुसम थे। श्री कृष्ण रूप में अवतरित होकर उन्होंने दर्शाना चाहा कि अध्यात्मिकता गम्भीरता नहीं है। यह तो एक खेल है जो व्यक्ति ने खेलना है। लोग श्री कृष्ण को बिल्कुल भी नहीं समझते। श्री राम के त्यागमय जीवन के बाद श्री कृष्ण के विचारों को लोग नहीं समझ पाते। मेरे विचार में श्री कृष्ण के विचार बहुत ही उच्च थे क्योंकि उन्हें यह दर्शाना था कि यह संसार एक खेल है, माया है, और इन सब से भी परे यह आनन्द है। उनकी प्रणाली अत्यन्त मनोरंजक थी। उन दिनों उन्हें यह सुन्दर पांडाल और इतने सारे शिष्य उपलब्ध न थे तो उन्होंने अपने तरीके का इस्तेमाल किया। जब वे बच्चे थे तो यमुना से जल भर कर लाती हुई गोपियों के घड़े तोड़ दिया करते थे। जिससे कि यमुना का जल उनके पीठ से बह कर नीचे को आता था। यमुना नदी को राधा जी चैतन्यित करती थी। 'रा' अर्थात् 'शक्ति' और 'धा' अर्थात् 'धारण करने वाला'। वे नहीं जानते थे कि किस प्रकार उन लोगों को कुण्डलिनी के बारे में बताया जाए। अंतः कंकड़ मार कर वे उनके घड़े तोड़ देते थे जिससे कि चैतन्यित जल रीढ़ की हड्डी पर से नीचे को आता था और उन्हें कुण्डलिनी का आर्शीवाद प्रदान करता था। उनकी विधि अत्यन्त साधारण, खिलवाड़ सम और हल्की फुल्की थी। कोई नहीं जानता था कि वे यह सब क्या कर रहे हैं। जब वे बहुत छोटे से बच्चे थे तो यमुना में स्नान करती हुई स्त्रियों की कुण्डलिनी उठाने का प्रयत्न करते थे। उनके वस्त्र चुराकर वे छुपा देते थे और उन वस्त्रों को चैतन्यित करते थे। बहुत से लोग यह नहीं समझ पाते कि बाल्यकाल में वे इतने अबोध थे और उनके साथ छेड़छाड़ करके वे यह दर्शाना चाहते थे कि जीवन महान आनन्द के सिवाय कुछ भी नहीं। फिर वे गोपियों के वस्त्र उन्हें लौटा देते थे। बड़े होकर वे द्वारिका के राजा बने। अब हमारे देश के बहुत से पाश्चात्य बुद्धिजीवी लोग हैं जो यह कहने का प्रयत्न करते है कि श्री कृष्ण नाम के दो व्यक्ति थे। बिना अध्यात्मिकता को समझे और इसके पीछे छिपी सूक्ष्मता को जाने वे इसका विश्लेषण करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि उनकी सोलह हजार पत्नियां थी। ये सब उनकी शक्तियां थी। अब माँ के रूप में मेरे हजारों बच्चे हो सकते हैं, लड़के, लड़कियाँ, पुरूष और स्त्रियाँ। मेरे चरित्र के बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता। परन्तु पुरूषों के लिए यह बहुत कठिन कार्य है। अब उन्होंने अपनी सारी शक्तियों को स्त्री रूप में जन्म लेने दिया, उनका विवाह एक राजा के साथ हो गया। वास्तव में उनका विवाह नहीं हुआ। उस राजा ने उनका अपहरण करके उनको जेल में डाल दिया। श्री

कृष्ण ने उनकी रक्षा की, उसके चंगुल से उनको छुड़ाया और उनसे विवाह कर लिया। यदि आप ध्यान से देखें, तो विवाह पर बल दिया गया है। ये सोलह हजार शक्तियां है। उनकी सोलह कलाएं थी और सहस्रार की एक हजार पखुंडियां, तो इस प्रकार सोलह हजार शक्तियां बनती है। इसके अतिरिक्त उनकी पांच पत्नियां थीं। उन पर भी लोगों को ऐतराज है। ये पांच पत्नियां पंच तत्व थे। उन्हीं के सार तत्व स्त्री रूप में अवतरित हुए और श्री कृष्ण ने उनसे विवाह कर लिया। परन्तु वे पूर्णतः निर्लिप्त, निर्मोह थे। उनकी मोह हीनता की बहुत सी कहानियां हैं।

यमुना के किनारे पर एक महान ऋषि पहुंचे। द्वारिका में यमुना नदी न थी। वहां नर्मदा और ताप्ति नदी थी। श्री कृष्ण की पत्नियों ने उस सन्त की सेवा करने के लिए जाना चाहा। जब वे नदी पर गयीं तो देखा कि नदी में बाढ़ आयी हुई है। वे वापिस श्री कृष्ण के पास आयीं और उनसे इस समस्या का हल पूछा। तो श्री कृष्ण ने उनसे कहा कि जाकर नदी को बताएं कि ब्रहमचारी कृष्ण ने उन्हें भेजा है। सत्य जान कर नदी उन्हें जाने का मार्ग दे देगी। उनकी पत्नियां इस बात को सुनकर बहुत हैरान हुईं, पर श्री कृष्ण के समझाने पर वे वापस गयीं और नदी से कहा कि, "हमें ब्रहमचारी श्री कृष्ण ने भेजा है कृपा करके ऋषि पूजा करने के लिए हमें मार्ग दे दीजिए"। सत्य को सुनकर नदी का जल स्तर एकदम घट गया और वे उस सन्त के पास पहुंच गयीं। सन्त को भोजन आदि, खिलाकर जब वे पुनः नदी पर आयीं। तो नदी को बाढ़ ग्रस्त पाया। बहुत चिन्तित होकर वे उस सन्त के पास पहुंचीं और उनसे सारी बात बताई। सन्त ने उनसे कहा कि नदी को जाकर बताएं कि सन्त ने व्रत रखा हुआ था और उन्होंने कुछ नहीं खाया। वे बहुत हैरान हुईं क्यों कि सन्त ने पेटुओं कि तरह से खाया था। फिर भी वह उनसे ऐसा कहने को कह रहा था। पर वे नदी पर गयीं और सन्त के अदेशानुसार नदी से कहा। नदी का जल स्तर एक दम नीचे आ गया। वे बहुत हैरान हुईं पर नदी पार कर ली।

अब ये लोग जो इस ऊँचाई तक पहुंच चुके हैं वे खा कर भी नहीं खाते। विवाहित होते हुए भी ब्रहमचारी है। जिस भी कार्य को वे करते रहें वे पूर्णतः निर्लिप्त रहते हैं। मैं नहीं कह सकती कि किस प्रकार के निर्लिप्त रहते हैं। परन्तु ध्यान धारणा से कुण्डलिनी के कार्यान्वित तथा स्थापित होने से ऐसा हो सकेगा। आप आश्चर्य चकित रह जाएंगे, कि आप किस प्रकार निर्लिप्त हो जाते हैं और बिना किए किस प्रकार सब कार्यों को कर लेते हैं। बिना किसी थकान के आप बहुत से कार्य कर सकते हैं। हमें यह अवस्था प्राप्त करनी है। यह जानने के लिए कि आप उस स्तर तक पहुंचे या नहीं आपको ध्यान रखना होगा कि कितनी बार आपने, "मैं" या "मेरा" शब्द प्रयोग किए हैं, "मेने यह कार्य किया", "मेने वह कार्य किया" या "यह मेरा बच्चा है", "यह मेरा घर है"। यदि आप, "मैं" शब्द का बहुत अधिक उपयोग करते हैं तो आप निर्लिप्त नहीं हुये। अतः अन्तदर्शन करने का प्रयत्न करें। यह सब भ्रमित करने वाले शब्द हैं। निर्लिप्तता एक अवस्था है जिसमें आपको बढ़ना है। सिर के भार खड़े रहकर आप इसे नहीं प्राप्त कर सकते।

चाहे श्री कृष्ण अर्जुन के साथ युद्ध में गये फिर भी जीवन पर्यन्त उनका एक ही सन्देश था और वह था 'पूर्ण निर्लिप्तता'। उन्होंने कहा कि वे युद्ध में केवल सारथी के रूप में जाएंगे, शस्त्र नहीं उठाएंगे, युद्ध नहीं करेगें। अर्जुन से उन्होंने कहा कि यदि तुम्हें ये शर्तें स्वीकार हों तभी मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। जब अर्जुन ने उनसे प्रश्न किया कि किस प्रकार यह अपने सम्बन्धियों, गुरूओं, मित्रों आदि का वध करें और जब इसके कारण अर्जुन बहुत हताश हुए तो श्री कृष्ण ने उन्हें बताया कि सत्य तो ये है कि वे सारे लोग पहले ही मर चुके हैं। जो भी जन्मा है उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है। अतः तुम्हें इन सबका वध करना होगा। लोग कह सकते हैं कि श्री कृष्ण हिंसा सिखा रहे थे। परन्तु यह सत्य नहीं है। उन्होंने यह कहा कि जो अर्धमी है, क्रूर है और धर्म परम्परा के विरुद्ध है उनका वध होना ही चाहिए। आप उन्हें मारें या न मारें वे मर चुके हैं। क्योंकि उन्होंने इतने अधिक अपराध किए हैं। वे पहले ही मर चुके हैं। अतः आपको यह नहीं सोंचना चाहिए कि आप उन्हें मार रहे हैं। परमात्मा ही उन्हें मार रहा है। इस प्रकार युद्ध शुरू हुआ। गीता में भी उन्होंने जो कुछ कहा उसे लोग समझ नहीं पाये। उनकी निर्लिप्सा को आप इसी बात से समझ सकते हैं युद्ध भूमि में भी वे दर्शन शास्त्र पढ़ा रहे थे। पहली बात जो उन्होंने अर्जुन से कही वो यह थी कि ज्ञान को प्राप्त कर लो। ज्ञान अर्थात् बोध जो कि आत्म साक्षात्कार से ही प्राप्त हो सकता है। परन्तु लोग इस बात को नहीं समझते, वे समझते हैं कि पुस्तकें पढ़ने से, गीता उच्चारण से या भाषण सुनने से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। हमारे देश में बहुत से लोग श्री कृष्ण पर भाषण देते हैं परन्तु अपने जीवन में वे बड़े भयानक व्यक्ति हैं।

श्री कृष्ण कोई व्यापारी न थे जो धीरे-धीरे सारी बाते बताते, वे स्पष्ट वादी थे और स्पष्ट रूप में अर्जुन को बताया कि तुम्हें "स्थित प्रज्ञ" बनना होगा अर्थात् सहजयोगी बनना होगा।

तब अर्जुन ने श्री कृष्ण से पूछा कि वह उसे युद्ध में भेज कर, यह "कर्म" क्यों करवाना चाहते हैं। इस बात को भी लोगों ने बहुत गलत समझा है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद ही आप इसे समझ सकते हैं और "कर्म" कर सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जो भी कार्य आपको करना है उसे करें और मेरे चरण कमलों में समर्पित कर दें। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है।

जब तक आप यह समझते हैं कि आप कोई कार्य कर रहे हैं तब तक आपके अन्दर अहम या "मैं" बने हुए है। आप कह सकते हैं कि आप इसे परमात्मा के चरण कमलों में समर्पित कर रहे हैं, परन्तु आप वास्तव में ऐसा नहीं करते। जब अर्जुन ने यह प्रश्न पूछा तो श्री कृष्ण को महसूस हुआ कि मानव स्वभाव इतना सरल नहीं है, इसलिए अत्यन्त युक्तिपूर्वक उन्होंने अर्जुन को बताया कि अपने सभी कर्मों को परमात्मा के चरण कमलों में समर्पित कर दें। यद्यपि वे जानते थे कि मानव ऐसा न करेगें। मानव ने युग-युगान्तरों में ऐसा करने का प्रयत्न किया परन्तु सफल न हो पाए, क्योंकि जो भी कार्य हम करते हैं उसके लिए स्वयं को उत्तरदायी मानते हैं। इसलिए हम अपने कर्मों को परमात्मा के चरण कमलों में समर्पित नहीं कर पाते। ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने कत्ल करके यह कह दिया कि हमने इसे परमात्मा के चरण कमलों में अर्पित कर दिया है। इस प्रकार कि भ्रान्ति ने इस देश के लोगों को देवी के नाम पर यात्रियों की हत्या जैसे कार्य करने कि प्रेरणा दी। परन्तु श्री कृष्ण ने जो कहा वह कर सकना आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के बाद ही संभव है। जब आप वास्तव में महसूस करते है कि आप कर्त्ता नहीं है तभी यह कार्यान्वित होता है। किसी सहजयोगी से जब हम आत्मसाक्षात्कार देने के लिए कहते है तो वह कहता है, "यह कार्य नहीं कर रही", "यह नहीं जा रही" आदि-आदि। "तृतीय पुरूष" में वह बात करता है, वह तृतीय पुरूष बन जाता है, स्वयं को कर्ता नहीं समझता अपने हाथों से वह कुण्डलिनी, उठा रहा होता है परन्तु उसे यह नहीं लगता कि वह इस कार्य को कर रहा है। वह कहता है कि यह चक्र ठीक नहीं है, यहां रूकावट है आदि। इस प्रकार यह "कर्म", "अकर्म" बन जाता है। सभी कुछ करते हुए भी आपको लगता है कि आप कुछ नहीं कर रहे। श्री कृष्ण को लगा कि लोग आत्मसाक्षात्कार को तो प्राप्त नहीं करेंगे। इसलिए यह बन्धन लगा देना ही ठीक है कि सारे कर्मो को परमात्मा के चरणकमलों में समर्पित कर दो। तब अर्जुन ने भक्ति के विषय में पूछा और बड़ी चतुरता पूर्वक श्री कृष्ण ने उत्तर दिया। आप लोग यह समझ लें कि मैं श्री कृष्ण कि तरह चतुर नहीं हूँ। सभी बातें मैं स्पष्ट रूप से करती हूँ। श्री कृष्ण जानते थे कि मानव बहुत ही चतुर है और सरल ढंग से बताई गयी बात पर उसे विश्वास नहीं हो सकता। अतः उन्होंने कहा कि जो भी जल, फूल, फल आप मुझे अर्पण करेगें मैं उसे स्वीकार करूंगा। परन्तु आपको अनन्य भक्ति करनी होगी। अनन्य जिसमें आपके और मेरे सिवाय दूसरा कोई न हो। अर्थात् मेरे से सम्बन्ध स्थापित करने के उपरान्त ही आप भक्ति कर सकते हैं। परन्तु लोग या तो इस अनन्य को समझते नहीं या समझना नहीं चाहते। इसका अर्थ है कि आप एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं। श्री कृष्ण ने कहा कि इसी भक्ति को मैं स्वीकार करूंगा। अतः व्यक्ति को परमात्मा से जुड़ना होगा। अन्यथा यह बहुत सी समस्याओं में फंस जाएगा। जैसे यदि यह माइक्रोफोन अपने ऊर्जा स्रोत से न जुड़ा हो तो यह कार्य न करेगा। भक्ति के विषय में भी ऐसा ही है। श्री कृष्ण क्योंकि एक अवतरण थे तो कुछ नियमों का भी पालन करना होगा। एक मुख्य मंत्री को भी यदि आपने मिलना हो और आप उसका नाम पुकारते चले जाएं तो आपको बंदी बना लिया जाएगा। श्री कृष्ण तो सर्वशक्तिमान परमात्मा है। उनका नाम हम घटिया ढंग से लगातार नहीं जप सकते। इसी के कारण लोगों ने अपनी कुण्डलियां खराब कर ली है और विशुद्धि की समस्याएं उन्हें हो गयी है। अनाधिकार भक्ति के कारण उन्हें अपने हाथों पर कुछ महसूस नहीं होता।

श्री कृष्ण को समझने के लिए आपको सूक्ष्म होना होगा। उनकी शरारतें, चुहलें, शिशुसम आचरण इतने मधुर एवं सुन्दर हैं कि वे अबोधिता एवं सम्मान भावों की सृष्टि करते हैं। कोई भारतीय जब किसी बच्चे को देखता है तो उसमें "वात्सल्य" भाव जागृत हो जाता है। बच्चे के प्रति अत्यन्त प्रेम, स्नेह एवं सुरक्षा कि भावना। परन्तु पश्चिम में मेने देखा है कि बच्चों के प्रति आक्रमक भाव होते हैं। मैं इसे समझ नहीं पाती। वासल्य के स्थान पर उनके क्रूर भाव हैं। मैं नहीं जानती कि वे भूत बाधित है या उनके पूर्व जन्मों के संस्कार ऐसे हैं। परन्तु जिस प्रकार छोटे-छोटे बच्चों की अबोधिता पर वे आक्रमण करते हैं वह मानव के लिए कर पाना असंभव सा प्रतीत होता है। अतः श्री कृष्ण का शिशुसम आचरण, आपको बच्चों के प्रति प्रेम स्नेह तथा सुरक्षा भावना से ओत प्रोत कर देता है।

श्री कृष्ण पाडवों से सम्बन्धित थे। द्रौपदी भी उनकी बहन थी। श्री विष्णु माया का जन्म द्रौपदी रूप में हुआ था। उनकी मां यशोदा "मेरी माँ" थी, जिन्होंने श्री गणेश को शिशु के रूप में जन्म दिया और राधा जी महालक्ष्मी थीं। इस विचित्र गर्भधारण पर भारतीय सन्देह नहीं करते परन्तु अन्य लोगों के लिए इस पर विश्वास कर पाना कठिन कार्य है। लोग इस पर बहस करते हैं। भारतीयों के लिए इस पर विश्वास कर लेना अत्यन्त सुगम है क्योंकि श्री गणेश को भी इसी प्रकार बनाया गया था। "राधा मेरी माँ" थीं और यदि आप देवी महात्मय को पढ़े तो आप हैरान होंगे कि उसमें स्पष्ट बताया गया है कि ईसा कौन थे और वे ही आश्रय है अर्थात् मूलाधार हैं। उन्हें महाविष्णु कहा गया है वे ही पूरे ब्रहमाण्ड को आश्रय देते हैं। ये सभी लोग परस्पर सम्बन्धित थे, परन्तु वास्वविकता के ज्ञान की कमी में हम मूर्खता पूर्वक इन्हें लेकर झगड़ते रहते हैं। राधा जी उन्हें यशोदा का नाम देना चाहती थी। अतः उन्हें "येशु" कहा जाता है। उत्तरी भारत में "यशोदा" को "जसोदा" कहते है। इस प्रकार वे जीसस कहलाएं। मैं जो कह रही हूँ उसे आप अपनी चैतन्य लहरियों पर परख सकते हैं। ये सब एक दूसरे से सम्बन्धित थे तथा दैवी लोग थे। हम न तो उन्हें समझ सकते हैं,

न उनका विश्लेषण कर सकते हैं और न ही टीका-टिपण्णी। ऐसा करना मानव अहंकार का द्योतक है क्योंकि अपने सीमित ज्ञान से मानव परमात्मा की बात करना चाहता है। मानव बुद्धि से तथा मस्तिष्क से यह परे की बात है। तो केवल जो कार्य हम कर सकते हैं वह है विनम्र तथा समर्पित होना। इसी प्रकार "इस्लाम" आया इसका अर्थ है "समर्पण"। परन्तु अपने समर्पण को वे स्वयं ही जानते हैं। ईसाई कहां ईसा की बात को मान रहे है और हिन्दू कहां मानते है कि सब के हृदय में आत्मा का निवास है? सभी में आत्मा है तो कैसे आप जाति व्यवस्था बना सकते हैं। परमात्मा का अत्यन्त धन्यवाद है कि विश्व में बहुत से लोग सहजयोगी बन गये हैं। अपने दैवी जीवन में हमने ये बनावटी सीमाएं पार कर ली हैं। परमात्मा किस प्रकार लोगों को ऊँच-नीच में बाँट सकते हैं? एक मात्र कार्य जो आपने करना है वह है इस अवस्था को प्राप्त करना जिसमें आप पूरे विश्व को एक दैवी नाटक के रूप में देख सकें, जैसे श्री कृष्ण ने कहा है कि "आप साक्षी हैं"।

मुझे आपको श्री कृष्ण की एक कहानी सुनानी है क्योंकि यमुना नदी, श्री कृष्ण के कार्यों की याद मुझे दिला रही है। कल आप लोगों को नाचते हुए और आनन्द लेते हुए देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि इससे पूर्व जिन लोगों ने इस प्रकार के नृत्य किये वे सन्त नहीं थे। वे साधारण लोग थे जिनके साथ श्री कृष्ण ने 'रास करनी चाही। 'रा' अर्थात् शक्ति और 'स' अर्थात् संचार। इस प्रकार राधा जी की शक्ति से उन सब को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ।

आजकल सभी धर्मों ने अपना आकार और अर्थ खो दियां है और वे भ्रष्ट हो गये हैं। इसका कारण ये है कि यह मानसिक दृष्टिकोण है जिसकी सीमाएं है। कुछ समय पश्चात् इसका पतन हो जाता है क्योंकि इसमें सत्य की शक्ति का अभाव है। इसी कारण हम कला में, संगीत में तथा अन्य सभी क्षेत्रों में पतन होता हुआ देखते हैं। अब आप सब लोगों ने सत्य को प्राप्त कर लिया है अतः कृपया समझने का प्रयत्न करे कि सत्य शाश्वत है और सत्य ही प्रेम है। सत्य दैवी प्रेम हैं, जिसके कोई परिणाम नहीं होते। यह किसी चीज का न तो दावा करता है न ही इच्छा। यह मात्र प्रेम करना चाहता है और जब आप प्रेम की इस सर्वव्यापक शक्ति को दयामय होते देखते है तो सब के साथ कोई न कोई चमत्कार घटित होता है। मेरे भिन्न प्रकार के चित्र दिखाने जैसी बहुत सी दिलचस्प घटनाएं घटित करके देवी प्रेम की यह सर्वव्यापक शक्ति आपको विश्वस्त चाहती है। इस बार के नवरात्रि में जो चित्र मैंने देखा वह सर्वोत्तम था और उसकी पृष्ठभूमि (बैक ग्राउंड) बिल्कुल भिन्न प्रकार कि दिखाई दी। कोई गोल सी वस्तु और एक पर्दा था जिसके पीछे से सूर्य के समान झांकती हुई कोई चीज थी। यहां से जब मैं रूस गयी तो वहां मंच पर मैंने अपने पीछे यही दृश्य देखा। तो वहां पर प्रकट होने से पूर्व दैवी शक्ति के आश्रय से इसे नवरात्रि में देख लिया गया। मास्को में मेरे पीछे के इस दृष्य को सब लोगों ने देखा। अतः यह सर्वव्यापक शक्ति इस प्रकार सभी प्रकार के खेल करती है। मेरी अनुपस्थिति में भी ऐसा प्रतीत होता है कि मैं उपस्थित हूँ। यह बहुत से तरीको से कार्य करती है। और व्यक्ति को समझना पड़ता है कि जिस घटना को हम चमत्कार मान रहे हैं वास्तव में वह परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति का खेल होता है।

परमात्मा आपको धन्य करे